अनुक्रमणिका

विषय-सूची पृष्ठ- संख्या

१ सर्वोपासनीय 'ब्रज का विशुद्ध प्रेम'....................०३

२ सच्चे ब्रजोपासक 'भावुक सेवाराधकजन'..........०५

३ सफलता की नींव 'नियमित आराधना'............१०

४ सर्वोत्तम ब्रजप्रेमिका 'श्रीराधारानी'....................१८

५ परमप्रेमप्रदायिनी 'श्रीधाम में आराधना'.............२३

६ 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' से ब्रजसीमान्त-क्षेत्र में हुई जनजागृति...२९

राधा रानी को सहारौ मेरौ सांचौ है भली ||

श्री राधा वृषभानु कुमारी
महारानी हैं भोरी भारी
चँदा हू ते रूप उजारी
सदा विराजैं बरसाने में कीरति की लली |
कबहूँ खेलैं पीरी पोखर
कदमन छैयाँ प्रेम सरोवर
सुन्दर है वृषभानु सरोवर
ठौर-ठौर पै लता झूम रही कुञ्जन की गली |
कबहूँ आवै खोर साँकरी
मोहन जहाँ मथनिया फोरी
दधि ते भीजी ब्रज की गोरी
श्री राधा उरजन की शोभा देखैं श्याम छली |
श्री गहवरवन नित्य विहारैं
जहाँ साँवरो डगर बुहारैं
राधा राधा नाम उचारैं
फूलन ते सिंगार करैं लै कमलन की कली ||

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहू तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्यो |

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,

गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

(Website :www.maanmandir.org)

(E-mail :ms@maanmandir.org)

mob. : 9927338666, 9837679558

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकठ्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

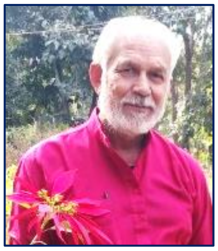

प्रकाशकीय

ब्रज के परम विरक्त संत पूज्य श्री रमेश बाबा जी जिन्हें ब्रजवासी अपने परिवारी जनों से भी अधिक प्रेम करते हैं। करें भी क्यों नहीं ? जिनके आराध्य ही ब्रजवासी और ब्रज वसुंधरा है। बाबा ने प्रयाग की पावन भूमि और एक प्रतिष्ठित परिवार व उच्च शिक्षा तथा माता-पिता की एकमात्र संतान होने की विषम परिस्थिति, सब कुछ की अनदेखी करके ब्रज रज का आश्रय लिया। आश्रय भी ऐसा कि बाबाश्री को अखंड ब्रजवास करते हुए ६७ वर्ष हो गये, उन्होंने कभी जन्म भूमि तो क्या, ब्रज सीमा से बाहर भी कदम नहीं रखा। ब्रज व ब्रजवासियों की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। महाराजश्री ने, भगवन्नाम प्रभात फेरी हो या ब्रजयात्रा अथवा ब्रज के वन, सरोवर, पर्वत, गोमाता के संवर्धन सरंक्षण कार्य, इन सब के पीछे ब्रजवासियों के ही हित की दृष्टि थी।

राधारानी ब्रजयात्रा को जितना प्रेम ब्रजवासियों का मिलता है उतना संभवतया किसी को नहीं। जनपद भरतपुर हो या मेवात का नूंह पलवल अथवा उत्तर प्रदेश का अलीगढ़, मथुरा, सर्वत्र ब्रजवासियों के प्रेम का अद्भुत नजारा दिखाई दिया। आवास के लिए निःशुल्क भूमि उपलब्ध कराना, पुष्प वर्षा व बाल भोग भोजन से यात्रियों की सेवा किया जाना, रात्रि में संकीर्तन करना, बाबाश्री के प्रति अपनी भावाभिव्यक्ति का द्योतक है।

ब्रजयात्रा में प्रतिदिन शास्त्रीय संगीत की मधुर स्वर लहरियों पर थिरकती ब्रज बालिकाओं द्वारा यात्रियों की राह को और भी अधिक रसमयी व सुखद बनाया जाता देखा गया। ब्रजवासी और बाबाश्री के पारस्परिक प्रेम की अद्भुत झांकी देखने को इस यात्रा में मिलती है।

प्रबंधक
राधाकांत शास्त्री
श्रीमान मन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

सर्वोपासनीय 'ब्रज का विशुद्ध प्रेम'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग (१/८/२००३) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका व्यासाचार्या साध्वी मुरलिकाजी, मानमन्दिर, बरसाना

शुद्ध प्रेम क्या है ? शुद्ध प्रेम का जो स्वरूप रसिकों, महापुरुषों तथा शास्त्रों के द्वारा बताया गया है कि जिसमें कोई कामना का गन्दापन न हो, कोई वासना की धुंधलाहट न हो, वही शुद्ध प्रेम है | इस प्रेम के सन्दर्भ में श्रीनारदजी ने कहा है –

"यथा ब्रजगोपिकानाम् |" (नारदभक्तिसूत्र)

सम्पूर्ण ब्रह्मांड में प्रेम तो केवल गोपियों ने ही किया; जिस प्रेम में किञ्चत्मात्र भी निजसुखइच्छा (निजीवासना) नहीं थी | स्वयं विचारकर देखो कि भगवान् श्रीकृष्ण ने लगभग १०० वर्ष तक द्वारिका में निवास किया लेकिन एकमात्र ब्रजलीला ही समस्त संसार में पूजनीय (आराधनीय) हुई, गायी गई | कहाँ तो १० वर्ष (भगवान् ने ब्रज में १० वर्ष तक निवास किया है) तथा कहाँ (द्वारिका के) १०० वर्ष | ब्रजवास की अवधि (१० वर्ष) से ११ गुना अधिक द्वारिका में भगवान् ने निवास किया परन्तु प्रेम के कारण ही ब्रज का थोड़ा-सा समय ही समस्त संसार का उपासनीय बन गया | भगवान् श्रीरामचन्द्रजी १३ हजार वर्षों तक धराधाम पर रहे परन्तु उनके १४ वर्ष के वनवास की लीला ही ज्यादातर गायी गई | इसका कारण श्रीमद्भागवतजी में लिखा है –

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दण्डककण्टकैः ।
स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात् ततः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ९/११/१९)

भगवान् जो १४ वर्ष तक वनों में घूमे, उसी लीला का अधिकांश गायन किया गया तथा उसी समय के श्रीचरण भक्तों के हृदय में विराजमान हुए | उसका कारण यह था कि १४ वर्ष के वनवासकाल में दंडकारण्य के जंगलों में घूमते समय उनके युगलचरणों में काँटे चुभ गये थे, उस समय जो उन्होंने मर्यादा, पितृ आज्ञा, प्रेम, त्याग और तपस्या का आदर्श रखा, वह चिरस्मरणीय हो गया | कहाँ राजभवन में १३ हजार वर्ष का निवास तथा कहाँ १४ वर्ष का वनवास | सच्चा जीवन वही है जिस जीवन में चमक (हृदय में भक्ति की ज्योति) होती है, नहीं तो हजारों वर्षों तक भक्तिहीन जीवन जीने से कोई लाभ नहीं है | भगवान् १०-११ वर्ष तक ब्रज में रहे तथा लगभग ११० वर्ष द्वारिका में रहे लेकिन ब्रज में जो शुद्ध प्रेममयी लीला थी, उस माधुर्यमयी लीला के समक्ष सम्पूर्ण द्वारिका का वैभव फीका पड़ गया तथा उस शुद्ध प्रेम की चमक केवल कृष्णलीला में ही नहीं अपितु अन्य सभी भगवदावतारों में भी छा गई | भगवान् श्रीकृष्ण ने विशुद्ध प्रेम का एक ऐसा आदर्श रखा जो कि सृष्टिकाल से आज तक कभी भी नहीं रखा गया था | भगवान् श्रीकृष्ण ने दाम्पत्य जीवन द्वारिका में व्यतीत किया, जहाँ सभी कृष्ण-विवाहित १६ हजार १०८ रानियों के अलग-अलग महल, सभी के १०-१० पुत्र, सुख-सुविधायें लेकिन वह सम्पूर्ण वैभव ब्रज में गोपियों के विशुद्ध प्रेम (निष्काम प्रेम, समर्था रति, तत्सुखसुखित्व भाव) के समक्ष फीका पड़ गया | ब्रज के वन, कुञ्जों एवं निकुंजों में कोई सुख-सुविधायें नहीं थीं, भगवान् श्रीकृष्ण ने साधारण वन्यवेश धारण करके विहार किया | इस बात को प्रमाणित करने के लिए मथुरावासिनी स्त्रियों का पारस्परिक संवाद 'श्रीमद्भागवतजी' में वर्णित है

पुण्या बत व्रजभुवो यदयं नृलिङ्गगूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।
गाः पालयन् सहबलः क्वणयंश्च वेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/४४/१३)

सम्पूर्ण धामों, तीर्थों में धन्य तो ब्रजभूमि (ब्रजधाम) ही है | जिस सर्वश्रेष्ठ ब्रजधाम की कुञ्जों में, वनों में, उपवनों में, लताओं में पुराणपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण वन्य पुष्पों की माला पहनकर विचरण किया करते हैं तथा वेणु का सुमधुर निनाद करते हैं | यहाँ जो सुन्दर सुमधुर माधुर्यमयी वनलीला हुई है; इसी कारण यह ब्रजधरा सभी धामों (द्वारिका, अयोध्या, जगन्नाथपुरी, काशी आदि) से, सम्पूर्ण पुण्यस्थलों (प्रयागराज आदि) से अत्यधिक अविस्मरमणीय हो गई | जिस प्रकार भक्तजन 'भगवान् श्रीरामचन्द्रजी' की १३ हजार वर्षों की लीलाओं का गायन-स्मरण अधिकांश रूप में न करके अपितु

वनवासकाल की लीलाओं का गायन-स्मरण करते हैं क्योंकि उस १४ वर्ष के जीवन में मर्यादा व कर्त्तव्यनिष्ठा की चमक है; उसी तरह से श्रीकृष्ण की १०-११ वर्षों की माधुर्यमयी ब्रजलीलाओं के सामने द्वारिका की ११० वर्षों की वैभवपूर्ण लीलाएँ फीकी पड़ गयीं क्योंकि यहाँ (ब्रज में) जो प्रेम की चमक थी; वह अन्यत्र कहीं भी नहीं थी | एकमात्र केवल गोपीजनों की ही बात नहीं है बल्कि नंद, यशोदा, ग्वालबाल सभी का जो शुद्ध एवं निष्काम प्रेम था, उसकी कोई तुलना नहीं है | जब उद्धवजी मथुरा (मधुपुरी) से ब्रज पहुँचे तब यशोदाजी उद्धवजी से कह रही हैं – "हमारा लाला कन्हैया कहीं भी रहे लेकिन कुशल से रहे और करोड़ो वर्षों तक जिए |" ऐसा प्रेम कहाँ है ? ब्रज का वात्सल्य, सख्य सभी बेजोड़ (अतुलनीय) है फिर श्रृंगाररस की उपासिका ब्रजगोपियों की तो बात ही क्या है ?

कहियो यशुमति की आसीस।
जहाँ रहो मेरो नंद लाड़िलो, जीवो कोटि बरीस॥
मुरली दई दोहनी घृत भरि, ऊधो धरि लई सीस।
इह घृत तौ उनही सुरभिन को, जो प्यारी जगदीस॥
ऊधौ चलत सखा मिलि आए, ग्वाल बाल दस बीस।
अबके इहाँ ब्रज फेरि बसावो, 'सूरदास' के ईस॥

यशोदा मैया उद्धवजी से कहती हैं कि लाला से मेरा आशीर्वाद कह देना | "जहाँ रहो मेरो नंद लाड़िलो" यहाँ यशोदा मैया वसुदेव या देवकी का लाल नहीं कहती हैं | वह जो यशोदा मैया का नन्दलाल के प्रति प्रेम है; वह अमर है, उनकी ममता श्रीकृष्ण के प्रति अमर है | यशोदा मैया कहती हैं – "भले ही मैं अपने लाला कन्हैया का मुँह नहीं देख पाऊँ लेकिन वह जहाँ भी रहे; करोड़ों वर्षों तक जीता रहे |" यह सर्वोच्च कोटि की निष्कामता है; ये सब शुद्ध प्रेम के ज्वलंत उदाहरण हैं | ब्रज से मथुरा प्रस्थान करते समय उद्धवजी को यशोदा मैया ने माखन की एक सदलोनी लाकर दी - **"ऊधो धरि लई सीस"** अब ये पहले वाले उद्धव नहीं रहे, इस माखन की कीमत जान गये कि यह माखन नहीं अपितु कुछ और ही है (माखन के रूप में साक्षात् श्रीकृष्णप्रेम है) | यशोदा मैया ने उद्धवजी से यह नहीं कहा कि यह मेरे हाथ का चलाया हुआ माखन है बल्कि इससे भी आगे की बात कह गईं क्योंकि जिसके हृदय में मातृत्त्व भाव भरा होता है, वही माता की ममता को समझ सकता है | जिसका हृदय मातृत्त्वविहीन है तो वह उस बात को नहीं समझ सकता | यशोदा मैया जानती हैं कि केवल मेरा ही मातृत्त्व नहीं है, यह जो गौमाता खड़ी है वह भी तो कृष्ण- विरह में रुदन कर रही है तथा दूध भी तो इसी का ही है, मैंने तो दधि-मंथन ही किया है; इसलिए यशोदा मैया स्वकृतकार्य नहीं कहती हैं | वह तो उद्धवजी से कहतीं हैं कि कन्हैया से केवल इतना ही कहना कि यह उस गौमाता (सुरभि) के दुग्ध का माखन है; जिसकी तू सेवा करता था | जो आज भी आँगन में खड़ी मुझसे ज्यादा दुःखित हो रुदन कर रही है –**"इह घृत तौ उनही सुरभिन को, जो प्यारी जगदीस |"** यह दृश्य ग्वालबाल देख रहे थे | ग्वालबालों की वाणी से प्रतीत होता है कि वे सकाम हैं परन्तु वे भी परम निष्काम थे, उन्होंने जो कुछ कहा वह यशोदा मैया की विरहावस्था को ध्यान में रखते हुए कहा –

"ऊधौ चलत सखा जुड़ि आए, ग्वालबाल दस बीस |"

यह जो १०-२० ग्वालबालों की संख्या दी गयी; वह छन्द की दृष्टि से है, वस्तुतः वहाँ सभी ग्वालबाल आ गये थे और उन्होंने यशोदा मैया की यह स्थिति देखी तो उद्धवजी से कहा –

"अबकी बार ब्रज फेरि बसावो, 'सूरदास' के ईस |"

यह जो मैंने इस पद का भावार्थ किया; यह मैंने नहीं अपितु ब्रजगोपीजनों ने भी श्रीमद्भागवत में यही भाव व्यक्त किया है | भ्रमरगीत के एक श्लोक (श्रीमद्भागवतजी-१०/४७/२१) में श्रीजी उद्धवजी से पूछती हैं कि "अरे मधुकर ! क्या श्यामसुन्दर अपनी मैया-बाबा और सखाओं की याद करते हैं या नहीं ?" ये राधारानी की कितनी सहानुभूति और उदारता है | सखाओं के लिए भी उनके मन में कितनी उदारता है; क्योंकि जो सच्चा प्रेमी होता है; वह अपने दुःख से ज्यादा दूसरे के दुःख को समझता है, यही ब्रज का विशुद्ध प्रेम है, जहाँ प्रेमास्पद की प्रसन्नता ही अपना सुख है |

सच्चे ब्रजोपासक 'भावुक सेवाराधकजन'

श्रीबाबामहाराज के विशेष उद्बोधन (१५ जनवरी २०१४) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी कृष्णाजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमानमन्दिर के अति निःस्पृह, सच्चे ब्रजोपासक व बाबा महाराज के सर्वाधिक प्रिय सन्त परम श्रद्धेय श्री सखीशरण महाराज के नित्य धाम गमन होने पर उनकी स्मृति में मान मन्दिर के रसमण्डप हॉल में श्रीमद्भागवत सप्ताह यज्ञ का आयोजन किया गया था, जिसमें व्यासाचार्या साध्वी मुरलिकाजी ने सात दिनों तक श्रोताजनों को कथामृत का रसास्वादन कराया | परम पूज्य श्रीबाबा महाराज भी एक दिन इस कार्यक्रम में पधारे और उन्होंने श्रीसखीशरण महाराजजी की स्मृति में सभी श्रोताओं के मध्य इस प्रकार अपने उद्गार व्यक्त किये –

यहाँ (भागवत सप्ताह समारोह में) आने का हमारा इतना ही प्रयोजन है कि हम परम संत श्रीसखीशरण महाराजजी की सेवा में आये हैं | सखीशरणजी एक बहुत बड़े ब्रजोपासक थे और उन्होंने वह काम किया, जो हम भी नहीं कर पाये | आज तक किसी भी ब्रजवासी से उनका कलह नहीं हुआ, सभी में वे कृष्ण भाव रखते थे, सभी लड़कियों में श्रीजी का भाव रखते थे, मानमन्दिर की सभी कन्यायें इस बात को जानती हैं और पचासों साल तक ब्रजवास करते हुए उनका ऐसा ही सुन्दर व्यवहार रहा; इसलिए वे एक सच्चे ब्रजोपासक थे | जब मैं पहली बार ब्रज में आया तो मेरे गुरुदेव ने मुझे शिक्षा दिया था कि ब्रजवासियों को कृष्ण मानना, अपना इष्ट मानना, बस यही ब्रजोपासना है |

ये क्रूराऽपि पापिनो न च सतां सम्भाष्य दृश्याश्चये,
सर्वान्वस्तुतया निरीक्ष्य परमस्वाराध्यबुद्धिर्मम ॥

(श्रीराधासुधानिधि – २६४)

जो ब्रजवासी क्रूर हैं, पापी हैं और जो देखने योग्य भी नहीं हैं, उनको भी देखकरके उनके प्रति इष्ट बुद्धि रखनी चाहिए, इस सिद्धांत की परीक्षा में सखीशरणजी उत्तीर्ण हुए; ऐसा एक सच्चा ब्रजोपासक इस दुनिया से चला गया, उसकी सेवा के लिए मैं इस कार्यक्रम में आया हूँ और मैं न किसी ब्रजवासी का गुरु हूँ, न किसी का मार्ग- दर्शक हूँ | ये सब ब्रजवासी दिव्य हैं | ये मुरलिकाजी कथा कहती हैं श्रीजी की कृपा से, मैंने इन्हें नहीं पढ़ाया, मैं गुरु बनने योग्य नहीं हूँ लेकिन फिर भी इस भाव से मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूँ कि सखीशरणजी जैसे उपासक तो अब चले गये, अतः उनकी सेवा में दो अक्षर बोलने आ गया; इसीलिए जाने क्यों मेरा गला रुक गया, अपने आप आँसू आने लगे, बहुत रोकने का प्रयत्न किया लेकिन सच्चाई छुप नहीं पायी, एक उपासक चला गया यहाँ से, एक सच्चा संत चला गया, पचासों साल तक वे गह्वरवन में रहे, किसी ब्रजवासी से उन्होंने कड़वा व्यवहार कभी नहीं किया, इसको उपासक कहते हैं, हमलोग क्या उपासना कर सकते हैं, केवल उपासना के नाम पर अपना उदर-पोषण करते हैं | उपासक तो वे महापुरुष हुए जैसे - विहारिनदेवजी (स्वामी हरिदासजी के प्रथम शिष्य थे विट्ठलविपुलदेवजी के बाद) जो साक्षात् बिहारीजी का दर्शन करते थे, उन्होंने लिखा है -**"हौं ब्रजवासिन को पाल्यो पिल्ला"** मैं तो ब्रजवासियों का पाला हुआ पिल्ला हूँ (पिल्ला कुत्ते के बच्चे को कहते हैं), ब्रजवासीजनों के प्रति ऐसी सर्वात्मसमर्पित भावना को 'ब्रजोपासना' कहते हैं; जब सम्पूर्ण ब्रज के प्रति ऐसा भाव हो जाए तो उसको हम उपासक मानते हैं | सखीशरणजी का ऐसा व्यवहार था कि मानमन्दिर के समीपवर्ती गाँवों के जितने भी ब्रजवासी हैं, वे सभी उनका सम्मान करते थे, सभी उनके प्रेम से अभिभूत थे, इसीलिए मैं यहाँ इस भागवत सप्ताह यज्ञ कार्यक्रम में आया हूँ, यह बताने के लिए कि यह यज्ञ पूरा सफल हुआ है, इसका कारण यह नहीं है कि मैं यहाँ आया हूँ, यज्ञ सफल होता है भावनाओं से | मानमन्दिर

की ओर से सन् २०१० में पहली बार वृन्दावन के कुम्भ में कैम्प (शिविर, तम्बू, खालसा) लगाया गया था और वह बड़ा सफल आयोजन था, हजारों लोग वहाँ निःशुल्क रूप से रुकते और प्रसाद पाते थे। इतने विशाल कुम्भ मेले में मानमन्दिर के ही टैण्ट में लोग सोते और खाते-पीते थे और वह कार्यक्रम सफल इसलिए हुआ क्योंकि हमारे यहाँ की बालिकाओं (आराधिकाओं) ने कथा-कीर्तन में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए बनाये गये शौचालयों को साफ किया। सबसे छोटी सेवा करना ही वास्तविक सेवा है। हम लोग साधुओं के भंडारे में पैसा बाँटने का काम लेते हैं, ये कोई सेवा नहीं हैं। सेवा तो श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में की थी –

गुरु शुश्रुषणे जिष्ण: कृष्ण: पादवनेजाने।
परिवेषणे द्रुपदजा कर्णो दाने महामना: ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/७५/५)

इतना बड़ा यज्ञ हुआ और वह इसलिए सफल हुआ क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने सबसे छोटी सेवा की थी।

"राजसू यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो, तामें जूठ उठाई।" ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ, रामावतार में भी यज्ञ हुआ है लेकिन ऐसा वहाँ रामजी ने नहीं किया जो यहाँ भागवत में लिखा है। द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण अपने सिर पर रखकर जूठन की टोकरी ले जाते हैं, ये काम सबसे छोटे (नीच) जाति के श्वपच-चांडाल आदि करते हैं और ये काम भगवान कृष्ण ने करके दिखाया तो यज्ञ हुआ फिर भी सफल नहीं हुआ। भक्तमाल में कथा है श्वपच वाल्मीकि की, उनके आने पर ही युधिष्ठिर का यज्ञ सफल हुआ, जब वे आये तभी शंख बजा, इसके पहले जब तक शंख नहीं बजा, यज्ञ सफल नहीं माना गया। एक व्यक्ति भी अभाव करता है तो उसका प्रभाव सारे समाज पर पड़ता है, जैसे - तरंगें होती हैं, किसी सरोवर में पत्थर फेंको तो तरंगें उठती हैं और सारे सरोवर पर उसका प्रभाव पड़ता है, इसी प्रकार विद्युत-तरंगें चलतीं हैं तो उसी से माइक, पंखे, टेलीविज़न तथा अन्य बहुत से उपकरण कार्य करते हैं। ये सभी उपकरण तरंगों से कार्य करते हैं। इसी प्रकार भाव भी एक तरंग है, इस तरंग का बहुत बड़ा विस्तार है। टेलीविजन की तरंगें तो केवल इस संसार में काम करती हैं, दिल्ली है, अमेरिका है, कहीं भी भेज दो लेकिन भाव की तरंगें भगवद्-धाम तक जाती हैं। 'भगवान्' द्रौपदी की एक आवाज में आ गये, गजराज की पुकार पर आ गये, उसके पीछे भाव- तरंगें थी। 'भाव तरंगें' ऐसी होती हैं कि उनको हम-तुम देख नहीं सकते, समझ नहीं सकते, उसको समझने की बुद्धि हम लोगों में नहीं हैं। **'भावग्राही जनार्दन:'** केवल भगवान् ही जानते हैं कि किसके हृदय में क्या भाव है ? इसलिए ब्रह्माजी ने श्रीभगवान् की स्तुति में कहा है -

त्वं भावयोगपरिभावित हृत्सरोज आस्से ... ।

(श्रीमद्भागवतजी ३/९/११)

जहाँ भावयोग है, वहाँ भगवान् रहता है और प्रकट होता है। भक्तों की भावनाओं के अनुसार भगवान् प्रकट हो जाते हैं। ब्रह्माजी ने यह सत्य बात कही है और भगवान् अपने भक्तों के भाव के वशीभूत होकर भगवद्धाम भी छोड़ देते हैं।

हरिरपि निजलोकं सर्वथातो विहाय
प्रविशति हृदि तेषां भक्तिसूत्रोपनद्धः।

(भागवत-माहात्म्य ३\७३)

मानमन्दिर के गुरुकुल में १०० से अधिक छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियाँ पढ़ रहे हैं और हम देखते हैं कि हमारे यहाँ कोई सुख-सुविधा नहीं है। देश में बच्चों के लिए बड़े-बड़े विद्यालय हैं, वहाँ बहुत सुविधाएँ हैं। हमारे यहाँ बच्चों को कोई सुविधा नहीं मिलती लेकिन फिर भी यहाँ पर बच्चे बड़े आनन्द से रह रहे हैं और प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में जागकर स्नान करते हैं और फिर श्रीजी की मंगला आरती का दर्शन कर कीर्तन करते हुए बरसाने की परिक्रमा करते हैं, ऐसा जीवन तो साधुओं का भी नहीं है। ये बच्चे प्रसन्न हैं क्योंकि इनमें भावयोग है। मानमन्दिर के रसकुञ्ज नामक 'आराधन-स्थली' में लगभग सवा सौ से अधिक आराधिकाएँ रह रही हैं, इन्होंने अपने माँ-बाप

छोड़े, अपना परिवार छोड़ा, संसार की समस्त आसक्तियों को छोड़ा और यहाँ बड़े आनन्द से रह रही हैं; ये भूल गयीं कि हमारा घर कहाँ था ? भूल गयीं कि हम किसकी बेटी हैं, कौन हमारी माँ है, कौन पिता है ? ये लोग यहाँ आनंद से रह रही हैं, ऐसा क्यों है ? इसका कारण यही है कि ये कृष्णाराधिकाएँ प्रतिदिन सायंकालीन आराधना में नृत्य-गान करती हैं | नाचना-गाना केवल आनंद में ही होता है, रस में ही होता है, इसीलिए इसे रसोपासना कहते हैं | भगवान् की कृपा से यहाँ ये 'भावयोग' चल रहा है, ये भावराशि श्रीजी देती हैं, इसकी स्वामिनी श्रीराधारानी हैं, जो भगवान् की आह्लादनी शक्ति हैं | 'आह्लाद' - महाप्रेम (विशुद्ध प्रेम) जहाँ से उत्पन्न हुआ, सारे संसार में जहाँ से प्रेम फैला, अनन्त संसार में जो कुछ भी प्रेम है, स्नेह है, उसकी मूल हैं राधारानी, विद्युत के समान जिनकी कान्ति है | राधारानी को वैष्णवशास्त्र में **'पुरंध्रीनां चूड़ामणि'** कहा गया है | पुरंध्री कहते हैं उस सुलक्षणा को, जिसके आने से स्वयं ही गाँव-नगर आदि सब आनंद-मंगल और वैभव से भर जाए, इतनी शुभलक्षणा वह होती है | राधारानी के प्रकट होने से सारा ब्रज, सारा संसार आनंद-मंगल से भर गया, इसलिए उन्हें 'पुरंध्रीनां चूड़ामणि' कहा गया, उन्हीं की कृपा से आज मानगढ़ में इतने प्रसन्न बच्चे रह रहे हैं, रसोपासना करने वाली देवियाँ रह रही हैं, जिन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और आश्चर्य ये है कि ये सेवापरायण हैं | छोटी से छोटी सेवायें करती हैं, शौचालय में मल-मूत्र तक साफ़ करती हैं; इन्हें ये सेवा की शक्ति केवल राधारानी ने प्रदान की है, यह मनुष्य के वश की बात नहीं है | मानमन्दिर में सर्वाधिक भक्तजनों का समुदाय है, जिनकी सेवा व आराधना-शक्ति से गौवंश का संवर्द्धन-संपोषण व बड़े-बड़े सेवा-कार्य सुचारु रूप से हो रहे हैं; ये श्रीजी की विशेष कृपा है | मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम लोग एक गाय भी पालेंगे | यह केवल श्रीजी की असीम दया है कि आज माताजी गौशाला में ५० हजार से अधिक गायें रह रही हैं और वे सभी प्रसन्न हैं, इनका आशीर्वाद है, उसी से मानगढ़ बढ़ रहा है |

देखो, जब पांडवों ने वनवास किया तो उनके लिए एक साल का अज्ञातवास था, अगर पता पड़ जाए कि पाण्डव कहाँ हैं तो फिर १३ साल के लिए वनवास करना पड़ता, अतः वे छिप कर रहे और कौरव उन्हें ढूँढ़ नहीं पाए | सारे संसार में कौरवों का राज्य था लेकिन राज्यशक्ति ढूँढ़ नहीं पायी, ऐसा अज्ञातवास किया पांडवों ने | पाँचों पांडवों और द्रौपदी को सारा संसार जानता था, द्रौपदी अत्यधिक सुन्दरी थी, यज्ञकुण्ड से प्रकट हुई थी, उसकी सुन्दरता की तुलना नहीं थी और पांडव भी छिप नहीं सकते थे, उनमें पौरुष इतना था कि वे देवताओं तक को जीत सकते थे और जीता, अर्जुन ने कई बार पराक्रम दिखाया | ऐसे लोग कैसे छिप सकते हैं लेकिन छिपे, बड़ी युक्ति से छिपे, वे विराट नगर चले गए और वहाँ राज्यचिन्ह छोड़कर उन्होंने नौकरी की | युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, द्रौपदी व नकुल-सहदेव ने नौकरी की | कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि एक साम्राज्ञी भी नौकरी करेगी, भीम भी नौकर बनेगा, ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता था, आखिर में जब १३ साल बीत गए तो दुर्योधन घबरा गया, उसने सोचा अरे ! ये पाण्डव तो वनवास से वापस आ जायेंगे | वह भीष्म पितामह के पास गया और उनसे बोला कि दादाजी ऐसा हो नहीं सकता कि आपको मालूम न हो कि पाण्डव कहाँ हैं, आप बताइये कि वे कहाँ हैं ? तब भीष्म ने कहा – "दुर्योधन, मैं असत्य नहीं बोलता हूँ, मुझे कुछ पता नहीं है, तुम जानते हो कि वचन की रक्षा के लिए मैं तुम्हारा साथ दे रहा हूँ और पांडवों का विरोधी हूँ, ये तुम देख लेना |" दुर्योधन खुश हो गया कि युद्ध तो होगा क्योंकि दादाजी वचन दे रहे हैं और युद्ध होगा तो वे हमारी ओर से लड़ेंगे | दुर्योधन बोला – "पांडवों के बारे में कुछ अंदाज से तो बताइये कि वे कहाँ हैं ?" भीष्म पितामह सत्य बोलते थे, वह बोले – "हाँ, अंदाज बता सकता हूँ,

जिस देश में गायें बढ़ रही हैं, दुधारू हैं, आनंद से हैं, वहीं पांडव होंगे, जाओ, बता दिया मैंने तुमको और निर्णय कर दिया |" सारी पृथ्वी में दुर्योधन के गुप्तचर थे और उन्होंने पता लगाया कि विराट नगर में गायें इतनी ज्यादा हैं कि संसार में कहीं नहीं हैं | दुर्योधन समझ गया कि पाण्डव विराट नगर में हैं | उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि विराट नगर में गायों पर हमला करो, पाण्डव अगर वहाँ होंगे तो अवश्य छुड़ाने आयेंगे | जो धर्मात्मा होता है, वह अवश्य रक्षा करता है, नहीं रक्षा करेगा तो उनका धर्म नष्ट हो जाता है | च्यवन ऋषि ने कहा है कि जिस देश में गायों की वृद्धि होती है और वे निर्भय श्वांस लेती हैं, कोई भय नहीं है उनको, वह देश शोभित होता है और उस देश में होने वाले सब पाप गौ माता नष्ट कर देती है | दुर्योधन की आज्ञा से कौरव विराटनगर गए और गायों की चोरी की, हमला किया तथा गायों को भगाकर ले चले | दुर्योधन का आदेश था कि सब गायों को हस्तिनापुर में ले आओ | पांडवों ने जब सुना कि कौरव विराटनगर की गायों का हरण करके ले जा रहे हैं तो उन्होंने विचार किया कि गायों की रक्षा करना धर्म है किन्तु यदि हम सामने लड़ेंगे तो कौरव समझ जायेंगे कि ये पाण्डव हैं क्योंकि धर्म के लिए लड़ेंगे तो जीतेंगे अवश्य, चाहे भीष्म हों, चाहे द्रोण हों, चाहे गुरु हों, दादाजी हों | गोपालजी ने गाय की सेवा किया, गाय से बड़ा कोई देवता नहीं है | कौरवों ने विराट नगर पर हमला किया, वह बड़ी लम्बी कथा है | अर्जुन ने अकेले ही भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि बड़े-बड़े महारथियों को जीत लिया, गायों की रक्षा के लिए वह अकेले ही लड़े, इसको कहते हैं धर्म | आज हम जैसे लोगों ने धर्म को कमजोर बना दिया, निःसार बना दिया है –

विप्रैर्भागवती वार्ता गेहे गेहे जने जने ।
कारिता कणलोभेन कथासारस्ततो गतः ॥

(भागवत माहात्म्य १/७१)

हम लोग लोभ से कथाएं कहते हैं, इसलिए कथा का सार तो चला गया, नहीं तो अवश्य देश का कल्याण होता है लेकिन हम जैसे लोगों ने कथा को, धर्म को निःसार बना दिया | भागवत माहात्म्य में लिखा है –

काम क्रोध महालोभ तृष्णा व्याकुल चेतसः |
तेऽपि तिष्ठन्ति तपसि तपः सारस्ततो गतः ||

(भागवतमाहात्म्य १/७३)

कलियुग में हम जैसे कामी, क्रोधी और लोभी लोग तृष्णा को लेकर चलते हैं और साधु बन जाते हैं, धर्माचार्य बन जाते हैं, जिससे तपस्या का सब सार नष्ट हो जाता है, इसीलिए इस पाप से बचने के लिए मैंने मानमंदिर में यह व्यवस्था बनायी है कि यहाँ के लोग निष्काम भाव से प्रचार करते हैं | केवल कथावाचक ही नहीं, यहाँ की साध्वियाँ भी गाँवों में प्रचार करने के लिए जाती हैं, ३० हजार गाँवों में इन्होंने कीर्तन फैलाया, भगवन्नाम का प्रचार किया, ये खाली हाथ जाती हैं और खाली हाथ आती हैं | कहीं से एक पैसा भी नहीं लाती हैं | मानमंदिर से ही प्रचार के लिए गाँवों में गाड़ी से ये देवियाँ जाती हैं, किसी भी गाँव में गाड़ी के लिए डीजल का भी पैसा नहीं लिया जाता | साधारण गाँवों में भारत का कोई भी कथावाचक कथा कहने नहीं जाता है क्योंकि कथावाचक वहीं जाएगा, जहाँ कुछ धन की प्राप्ति होगी | गरीब गाँवों में तो केवल मानमंदिर की ही बालिकाएँ जाती हैं और वहाँ भगवन्नाम प्रचार करती हैं, यही सब कारण है कि मानमंदिर आगे बढ़ रहा है, इसका कारण मैं नहीं हूँ, इसका कारण ये है कि यहाँ ऐसी दिव्य देवियाँ आ गयीं हैं, ऐसे बच्चे आ गए, ऐसे साधू आ गये हैं, जिनमें भावशक्ति दिखाई पड़ रही है और इसी से यहाँ दिन-प्रतिदिन गौ-सेवा भी बढ़ रही है | गौ-सेवा के लिए आज तक हम लोगों को कहीं से धन नहीं माँगना पड़ा | हमारे यहाँ चालीस हजार से अधिक गायें हैं और कुछ दिनों में अन्य गाँवों से भी यहाँ गायें आ रही हैं तो संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जायेगी, एक लाख तक तो अवश्य पहुँच जायेगी | इतनी अधिक गायों को रखने की शक्ति हम लोगों में कहाँ है, हम लोग तो रोटी माँगकर खाने वाले हैं, रोटी भी हमारे

पास नहीं है, ब्रजवासियों के टुकड़े खाकर हम लोग पलते हैं (ब्रजवासियों के पिल्ले हैं), फिर भी हमारे यहाँ इतनी गायें बढ़ती जा रही हैं, किसी से बिना माँगे बढ़ रही हैं, खर्च इतना है कि बताना नहीं चाहते, कई लाख रुपये रोज का खर्च है और आज तक माँगा नहीं गया, ये सब श्रीजी की कृपा से चल रहा है | प्रतिवर्ष मानमन्दिर से ब्रजयात्रा चलती है, उसमें भी हर साल लोग बढ़ रहे हैं, करोड़ों रुपये खर्च होते हैं | ये सब कौन देता है, जबकि यहाँ से कोई पैसा माँगने कहीं नहीं जाता, रसीद नहीं काटी जाती, किसी आदमी से पैसा नहीं लिया जाता, ये सब श्रीजी देती हैं, वे पुरन्ध्री हैं, उन्होंने मानमंदिर की गौशाला में सामर्थ्य और शक्ति भर दी है | ब्रज की सेवा के लिए मानमन्दिर से बहुत से असंभव कार्य हुए, जैसे - ब्रज के पहाड़ों की लड़ाई हम लोगों ने जीती, जबकि हम एक छोटे-से मनुष्य हैं, कामी, क्रोधी, लोभी, मोही और विषयान्ध जीव हैं लेकिन शक्ति आती है आराधना से | मानमन्दिर में प्रतिदिन नृत्य-आराधना होती है | जो लड़कियाँ यहाँ आराधना करती हैं, इनको धन नहीं चाहिए, इनको यहाँ कुछ नहीं मिलता है, न अच्छा भोजन मिलता है, न कुछ पैसा मिलता है | यही **न लेना** 'निष्किंचनता' ही मनुष्य को आगे बढ़ाता है और 'न लेने से ही' हमारी यात्रा बढ़ रही है, न लेना (निष्कामता) ही मुरली को आगे बढ़ा रहा है | पृथु भगवान् ने भागवत में कहा है –

सत्युत्तमश्लोकगुणानुवादे जुगुप्सितं न स्तवयन्ति सभ्याः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ४/१५/२३)

सभ्य कौन है ? जो समाज को अकेले पवित्र कर देता है, वह है सभ्य (श्री आदि गुणों से युक्त शीलवान मनुष्य) | समाज में ऐसे सभ्यजन दिखाई नहीं देते (अर्थात् बहुत कम 'विरले' ही हैं) जो यश, ऐश्वर्य आदि को छोड़कर चल रहे हों | मानमन्दिर में जो आराधना होती है, उसे करने वाली ये सब सभ्य लड़कियाँ हैं, इन्हीं की आराधना से गह्वरवन बचा, नहीं तो यह बिक गया था, अगर यह वन कट जाता तो यहाँ एक भी वृक्ष दिखाई नहीं पड़ता | इसके अतिरिक्त ब्रज के और भी बड़े-बड़े स्थान बचे, जैसे - पाण्डवगंगा बची, दर्शनवन बचा, अनेक कुण्ड बचे, ये सब आराधना की शक्ति से ही सुरक्षित हुए | आगे भी मान मन्दिर से भविष्य में बहुत कुछ होगा | यहाँ दिव्य आराधना करने वाली देवियाँ (आराधिकाएँ) रह रही हैं, भक्त बच्चे रह रहे हैं; ये सब लोग गुणातीत भक्ति कर रहे हैं | देखो, आज समाज में हम लोगों ने भक्ति को भी निःसार कर दिया है | पद्मपुराणोक्त भागवतमाहात्म्य के अनुसार कलियुग में भक्ति स्वयं दुर्बल और वृद्ध हो गयी थी, एक बूढ़े आदमी में कोई पुरुषार्थ नहीं होता, धाम के संसर्ग से वह (भक्ति महारानी) जवान हुई, नहीं तो बूढ़े व्यक्ति में क्या पुरुषार्थ हो सकता है ? यह वर्णन मिलता है पद्मपुराण के भागवत माहात्म्य में –

वृन्दावनस्य संयोगात्पुनस्त्वं तरुणी नवा ।
धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च ॥

(भागवतमाहात्म्य १/६१)

पद्मपुराण के भागवत माहात्म्य का ही विशेष महत्व है क्योंकि उसमें तीन बार भगवान् प्रकट हुए हैं – एक बार तो जब भक्ति पर कष्ट आता है फिर वह जवान हुई है, वह है **'भक्ति कष्ट निवर्तक अध्याय',** उसके बाद फिर भगवान् प्रकट हुए दूसरी बार, वह **'विप्रमोक्ष अध्याय'** कहा गया, जब आत्मदेव ब्राह्मण को मुक्ति मिली | तीसरी बार भगवान् फिर प्रकट हुए जब गौकर्णजी ने कथा पुनः कही और उसके प्रभाव से सारा गाँव, चराचर जीव, कीड़े-मकोड़े आदि सब भगवद्धाम चले गए, तब वहाँ भगवान् प्रकट हुए हैं, इस प्रकार ३ बार भगवान् प्रकट हुए और अंत में वहाँ महासंकीर्तन हुआ; उस संकीर्तन में उद्धव, प्रह्लाद आदि वैकुण्ठ के सभी पार्षद आये | ऐसा संकीर्तन हुआ कि ज्ञान-वैराग्य जवान हो गए और संसार कृतार्थ हो गया | हमारे यहाँ जो आराधना होती है रस मण्डप में, इसी की शक्ति से बड़े-बड़े काम हो रहे हैं, यहाँ की लड़कियाँ गाँव-गाँव में जाकर कथा कहती हैं, भगवन्नाम-प्रचार करती हैं क्योंकि इनको यश की इच्छा नहीं है |

सफलता की नींव 'नियमित आराधना'

भारत सरकार के एक मंत्री के साथ श्रीबाबामहाराज की वार्ता (७/८/२००३) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी मीराजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज के शब्दों में –

हमारा यह विचार है एवं श्रीमद्भागवत का भी यह मत है, अभी तो सरकार उसको नहीं मान रही है और उधर ध्यान भी नहीं गया है सरकार का लेकिन हमारी 'ब्रज-सेवा' करने की योजना है तथा कभी भगवान् उसको पूरा भी करेंगे और आप लोग देखेंगे कि ये केवल हमारी कल्पना मात्र ही नहीं है क्योंकि जब हमने ब्रज के सरोवरों के जीर्णोद्धार से सम्बंधित अभियान शुरू किये थे; तब सब लोग हँसते भी थे और ऐसा कहते थे कि आपके पास द्रव्य तो नहीं है, आपकी तो शेखचिल्ली वाली कल्पनाएँ हैं लेकिन जब भगवत्कृपा से वे कल्पनाएँ साकार होने लगीं तब लोग समझे कि कार्य पैसे से नहीं होता है, सेवा-कार्य तो 'भावनाशक्ति' से होता है और सभी जानते हैं कि कोसी में 'गोमती गंगा' के जीर्णोद्धार के समय बड़ा संघर्ष हुआ, बड़ी कठिनाइयाँ आयीं, अन्य जगह भी ऐसा हुआ और हम तो अशक्त हैं सब प्रकार से, केवल प्रभु कृपा से सब कार्य सम्पन्न हुए | अब हमारी योजना यह है जैसा कि भागवत में कहा गया है –

अगाधतोयह्रदिनीतटोर्मिभिर्द्रवत्पुरीष्याः पुलिनैः समन्ततः ।
न यत्र चण्डांशुकरा विषोल्बणा भुवो रसं शाद्वलितं च गृह्णते ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१८/०६)

हमारी नदियाँ ह्रदिनी होनी चाहिए, ह्रदिनी अर्थात् जैसे यमुनाजी ब्रज में थीं तो वहाँ कालिय-ह्रद था, दावानल-ह्रद था | नदियों में 'ह्रद' उसको कहते हैं जिसमें पानी इतना रहता है कि पाताल तक पहुँच जाता है | इस तरह नदियों के 'ह्रदिनी' होने से ये लाभ होता है कि सारे देश का जलस्तर नहीं गिरता है, ये भागवत (१०/१८/६) में लिखा हुआ है | आस-पास की जितनी भूमि है, उस सबमें नमी होने से उसका जलस्तर बना होता है, ऐसी नदियाँ थीं प्राचीन ब्रज व प्राचीन भारतवर्ष में | आज ये बौद्धिकता के अत्यन्त खोखलेपन की बात है, हम ये नहीं कहते कि हम बड़े बुद्धिमान हैं लेकिन फिर भी वर्तमान भारत में विचार चल रहा है नदियों के जोड़ने का या अन्य विचार जो चल रहे हैं नदियों के सम्बन्ध में किन्तु ये कोई नहीं सोचता कि प्राचीनकाल से, वैदिकयुग से भारत में जो पद्धति चली आ रही है, पुराणों के अनुसार जो पद्धति बतायी गयी है कि नदियों को ह्रदिनी बनाया जाये, उन्हें इतना गहरा किया जाये कि पानी पाताल तक पहुँचे | कल हमारे पास कुछ लोग आये तो हमने उनसे कहा कि ब्रज में मथुरा-गोकुल के पास जो गोकुल बैराज बना, उससे कोई फायदा नहीं हुआ, यमुना का शोधन नहीं हुआ | हमारी दृष्टि से सारा सरकारी धन व्यर्थ ही गया | विदेशों से जो आर्थिक मदद आयी, जापान आदि से, उसको हम जैसे मातृ-हत्यारे लोग सब धन खा जाते हैं | भारत माता की सेवा के लिए, यमुना मैया की सेवा के लिए धन आया, उसको हमलोग खा गये, इससे पता चलता है कि हम लोगों में कोई भावना (spirit) नहीं है, राष्ट्रीयता या राष्ट्रभक्ति नहीं है, यही एक दुःख की बात है | एक दूसरा विदेशी व्यक्ति हमारी माता की सेवा के लिए धन दे रहा है और हम उसे डकार गये, खा गये तो हम मातृ-हत्यारे ही तो हुए | हमने कल मानमन्दिर आये हुए विशिष्ट अतिथियों से कहा कि सरकार के द्वारा कुछ काम ठीक से नहीं हो सकता क्योंकि हम ५०-६० वर्षों से ब्रज में रह रहे हैं

और ४६ साल तक तो मुझे गह्वरवन को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ा तथा अब भी ब्रज के तीर्थों को बचाने के लिए हम लोग संघर्ष कर रहे हैं लेकिन सरकार के द्वारा हमें असफलतायें ही मिलीं | हम लोगों ने 'गह्ववरवन' को बड़ी मुश्किल से 'वन-विभाग' में कराया लेकिन नेताओं ने उसे वापस 'ग्राम-पंचायत' में करा दिया जिससे कि पुनः गह्वरवन के पेड़ कटने लग गये | इससे यह पता चलता है कि वर्तमान में हमारे देश की जो स्थिति है और जिसको हम अनुभव कर ही रहे हैं, वह यह है कि चरित्र (character) की शुद्धि नहीं है | इसीलिए हर्बर्ट स्पेन्सर जो कि एक पश्चिमी विद्वान है; उसने लिखा – "not education but character is man's greatest need and greatest safeguard" आज ये आवश्यकता नहीं है कि देश में टेक्नोलॉजी की बहुत बड़ी शिक्षा दी जाये, यह शिक्षा यदि दी भी जाये लेकिन जब लोगों में चरित्र (character) ही नहीं है तो देश में कुछ नहीं हो सकता है | आज हमारे देश का चरित्र गिर गया है | अगर कोई बहस करे कि नहीं, ऐसी बात नहीं है, ये बात गलत है तो यह सच्चाई नहीं है | वास्तविकता यह है कि देश का सामूहिक चरित्र गिर गया है, उसका प्रमाण यह है कि आज भीषण अपराधी भी सांसद बनकर कुछ भी कर सकता है, मंत्री बनकर वह कुछ भी कर सकता है और विजयी हो जाता है चुनाव में; ये दिखाता है कि हमारे देश का चरित्र गिर गया है, नैतिक या सामूहिक चरित्र गिर गया है | इसीलिए मेरी दृष्टि में नदियों का कोई भी विकास नहीं हो रहा है | कल जो लोग मुझसे मिलने आये थे, हमने उनसे कहा कि कभी हम इस काम को करेंगे, अभी तो जो हमने सरोवरों के जीर्णोद्धार का अभियान शुरू किया, पहले लोग इसे गप्प समझते थे क्योंकि हमारा कोई बैंक में खाता नहीं है, हम पैसा नहीं रखते हैं और हमसे लोग कहते भी थे कि आप तो कल्पनाएँ कर रहे हैं, सरोवरों का काम आप कैसे कर पायेंगे, तब हमने कहा था कि भगवान् की शक्ति है | ये मेरा विश्वास है कि भगवान् से बड़ा कोई नहीं है | कुछ वर्ष पहले का चमत्कार हम बताते हैं कि मानमन्दिर द्वारा बरसाने में वृषभानु कुण्ड के जीर्णोद्धार का कार्य शुरू हुआ तो आर्थिक सहयोग करने वाले व्यक्ति नाराज हो गए और नाराज होकर चले गए, अब चले जाओ, भगवान् तो भगवान् ही रहेगा | तुम भगवान् तो नहीं बन पाओगे, तुम्हारी सत्ता को तो हम नहीं मान सकते | हम मनुष्य की सत्ता को स्वीकार नहीं करते | मनुष्य कितना भी बड़ा बन जाये, वह मिथ्या अहंकार में डूब जायेगा, बड़ा तो एक भगवान् ही है | प्रारम्भ में वृषभानु कुण्ड में आर्थिक सहयोग करने वाले व्यक्ति ने ४० लाख रुपये निवेश (invest) किया था और उनकी कई करोड़ की यहाँ पर योजनायें थीं किन्तु वे चले गए; चले गए तो चले जाओ, उसके बाद भगवान् ने ऐसा विधान बना दिया कि कुछ सांसदों के ३५ लाख रुपए आ गये, जबकि हम लोग उनके पास नहीं गये थे | इस तरह से काम चल गया, हमने कोई प्रयत्न नहीं किया, हम केवल भगवान् का कीर्तन करते हैं और उसका चमत्कार हुआ है | किसी को भगवान् के कीर्तन के और चमत्कार देखने हैं तो हमारी यात्रा में आ जाओ | पाँच हजार यात्री पिछले साल यात्रा में थे, अन्य यात्राओं में यात्रियों से आयोजक लोग १५ हजार रुपये तक ले लेते हैं लेकिन हमारी 'राधारानी ब्रजयात्रा' पूरी तरह निःशुल्क है | भोजन, आवास, तम्बू, दवाइयाँ आदि सब कुछ निःशुल्क है, इस यात्रा में सब गरीब लोग आते हैं | करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं, ४० दिन तक यात्रा चलती है | जिसको भी

देखना हो, हमारी ब्रजयात्रा में प्रत्यक्ष आकर देख ले कि जहाँ कई हजार व्यक्ति निःशुल्क चलते हैं और इसका प्रभाव सारे भारतवर्ष में पड़ रहा है | हमारे पास प्रतिदिन लोगों के पत्र आते हैं | इसी यात्रा के प्रभाव से ब्रज के सैकड़ों गाँवों में प्रभात फेरियाँ चल रही हैं | इस सारे खर्च की व्यवस्था भगवन्नाम-संकीर्तन से होती है, हम आज तक कहीं चंदा करने कभी भी नहीं गये | विदेश तक के यात्री हमारे यहाँ ब्रजयात्रा में आते हैं | अतः कल जो लोग हमसे मिलने आये, हमने उनसे कहा कि हमारी जो योजना है, वह यह है कि गोकुल के आगे से लेकर शेरगढ़ के ऊपर तक यमुना को ह्रदिनी बनाया जाये, बड़ा गहरा बनाया जाये | एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि पानी कहाँ से आयेगा क्योंकि दिल्ली से या हरियाणा से यमुनाजी का सारा पानी रोक लिया जाता है तो इस प्रकार आपका 'ह्रद' बेकार जायेगा | हमने कहा ठीक है, पानी वर्षा में तो आता है, वह सब जमा हो जायेगा और जब नदी 'ह्रदिनी' बन जाती है तो उसमें से चाहे जितनी बिजली पैदा कर लो | बाँध के ऊपर बमबारी का डर रहता है लेकिन नदी को 'ह्रदिनी' बनाने में इस तरह का डर नहीं है | कोई 'शत्रु देश या आतंकवादी' बमबारी कर दें तो सैकड़ों गाँव नष्ट हो जायेंगे | अतएव ये सब बातें हम विचार कर रहे हैं, मुझमें कोई शक्ति तो नहीं है, हम लोग तो रोटी माँगकर खाने वाले हैं, भिक्षुक हैं, निर्धन हैं | हमारे पास कोई धन-संपत्ति नहीं है लेकिन भगवान् ने हमारे सब कार्यों को पूरा किया और ये योजना भी एक दिन पूरी होगी | मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि इस दिशा में ईमानदारी से ब्रज में भी पर्यावरण की रक्षा की जाए, ईमानदारी की बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि आजकल जितने भी विभाग हैं, वन विभाग आदि, सबमें भ्रष्टाचार इतना है कि वे स्वयं पेड़ कटवाते हैं, उनके खिलाफ कोई रिपोर्ट नहीं हो सकती | देश की क्या स्थिति है उसे आप हमसे ज्यादा जानते हैं क्योंकि मैं तो फिर भी जंगल में बैठा हुआ हूँ | अगर ईमानदारी के साथ सच्चाई को रखा जाए तो दबाव बनाया जा सकता है | इस प्रकार हमलोग प्रयास कर रहे हैं और यह प्रयास सामूहिक रूप में कुछ दिनों बाद आयेगा | अभी तो ऐसे ही चल रहा है, हालाँकि ब्रज के गाँव-गाँव में इसका विस्तार तो बहुत है और इसे सब लोग अनुभव भी कर रहे हैं लेकिन इसका सुसंगठित रूप हम बनाने वाले हैं 'ब्रज रक्षक दल' के रूप में और वह बहुत जल्दी सामने आयेगा, उसमें हम चाहेंगे कि ब्रज की रक्षा के लिए, ब्रज के पर्यावरण के लिए हर व्यक्ति सहयोग करे क्योंकि विश्व में जितनी भी पर्यावरण की रक्षा की भावना आज पैदा हुई है, ये भारतवर्ष में लाखों वर्ष पहले से चली आ रही है | मत्स्य पुराण में कहा गया है –

दस कूप समा वापी, दस वापी समो ह्रदाः |
दस ह्रद समः पुत्रा, दस पुत्र समो द्रुमाः ||

दस कुएँ बना दिए जाएँ, उससे ज्यादा अच्छा है एक बावड़ी बना दी जाए तो दस कुआँ बनवाने के बराबर पुण्य मिल जाएगा | दस बावड़ी की जगह एक 'ह्रद' बनवा दिया जाए, जैसे - मानसी गंगा तो उसके बराबर पुण्य हो जाता है और दस 'ह्रद' बनवाए जाएँ, उससे ज्यादा अच्छा है कि एक सत्पुत्र पैदा किया जाए, जो ईमानदार हो, भक्त हो, सदाचारी हो, चरित्रवान हो; किन्तु दस पुत्रों के बराबर है - एक वृक्ष की रक्षा कर दी जाय | इतना बड़ा वृक्षों का माहात्म्य हमारे यहाँ के साहित्य में जो लिखा गया है, वह विश्व के किसी साहित्य में नहीं है | यहाँ तक लिखा है –

'कोटि गाय बामन हत शाखा तोरत हरिहि विदूख |'

ब्रज की एक डाल तोड़ने से करोड़ों ब्रह्महत्या और

गौहत्या के बराबर पाप लगता है | अब देखिये, हमारे यहाँ शास्त्रों में कितनी महिमा लिखी है लेकिन क्रिया कुछ भी नहीं है | हमारे यहाँ से विशुद्ध भक्त ब्रजवासियों की एक टीम प्रतिवर्ष प्रचार करने के लिए अमेरिका जाती है | वे लोग बताते हैं कि अमेरिका में शीतकाल में बर्फ गिरती है, अतः लकड़ी के मकान बनाये जाते हैं लेकिन वहाँ कानून है कि अगर आपको एक पेड़ लेना है तो उसकी जगह ८ पेड़ लगाने पड़ेंगे तब आपको पेड़ मिलेगा | वहाँ बहुत हरियाली है, बहुत ज्यादा पर्यावरण की सुरक्षा है, इसके प्रति इतना अधिक उनका ध्यान है | लन्दन में टेम्स नदी है, उसका पानी शीशे की तरह साफ़ है और भारत में हम लोग कहते हैं - गंगा मैया, यमुना मैया, फिर भी हमें शर्म नहीं आती, इन नदियों में कीड़े घूमते रहते हैं; ये क्या है ? यह दिखाता है कि हमारा नैतिक स्तर कितना गिर गया है | जिस देश में नदियों को माता माना जाता है, वृक्षों की पूजा होती है | गीता में भगवान् ने कहा – **"अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्"** - वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ | हमारे शास्त्रों में वृक्ष को भी भगवान् माना गया है | उस देश में नैतिकता इतनी गिर गयी और उसका कारण भी स्पष्ट है |

मंत्रीजी, ('बाबाश्री' मंत्रीजी से कह रहे हैं) हमने इस विचार को बड़े-बड़े नेताओं के सामने रखा, उन्होंने स्वीकार भी किया, कुछ समय पहले कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेता अर्जुन सिंह भी यहाँ आये थे, हमने उनसे पूछा कि भारतवर्ष के पतन का कारण क्या है ? थोड़ा विचार कीजिये, फिर उसका उत्तर दीजिये | इसका उत्तर वे लोग नहीं दे पाते हैं | चन्द्रगुप्त के समय प्रसिद्ध विदेशी यात्री फाह्यान भारत आया था | उस समय का 'भारत' स्वर्ण युग में प्रतिष्ठित था | उसके बाद हर्षवर्धन के समय एक और विदेशी यात्री ह्वेनसांग 'भारत' आया | उसके पहले और भी बहुत से विदेशी यात्री मेगास्थनीज आदि आये हैं | इन लोगों ने जिस भारत का चित्रण किया है अपने लेखों में, वह एक प्रमाणिक बात है | फाह्यान लिखता है कि उस समय भारत में कोई मजिस्ट्रेट नहीं था, रजिस्ट्री नहीं होती थी, चोरी नहीं होती थी, यहाँ तक कि लोग लहसुन-प्याज नहीं खाते थे | फाह्यान का यह बयान तत्कालीन प्राचीन भारत के सम्बन्ध में है | उसके ४०० साल बाद हर्षवर्धन के समय ह्वेनसांग 'भारत' आया, उसने लिखा कि उसके समय में भारतवर्ष में स्त्रियाँ भी राजनीति में भाग लेने लगी थीं | हर्ष की बहन राजर्षि भी राजनीति में भाग लेने लगी, ये थोड़ा-सा परिवर्तन हुआ है लेकिन इन विदेशी यात्रियों ने मुक्त कंठ से भारत की प्रशंसा की कि ऐसा देश विश्व में कहीं नहीं है | सातवीं सदी की यह बात है और सातवीं सदी से आज इक्कीसवीं सदी में, १३-१४ सदी में भारत इतना गिर गया, इतना गिर गया कि मंत्री तो क्या प्रधानमंत्री तक पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं जो कि देश का सबसे प्रमुख व्यक्ति होता है और इतनी ज्यादा नैतिकता गिरी तो क्यों गिरी ? इसका एक ही कारण है, दूसरा नहीं हो सकता, जैसे कि हमारे यहाँ कहा गया है – **"यथा राजा तथा प्रजा |"** जबसे विदेशी मुस्लिम शासन आया भारत में, उसमें एक भी राजा ऐसा नहीं था जिसने निर्दयता-क्रूरता नहीं की हो, हत्याएँ न की हो और छल न किया हो | सर्वप्रथम मुस्लिम शासन था गुलाम वंश – जिसके प्रमुख शासक थे - कुतुबुद्दीन, इल्तुतमिश | इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन के बच्चों को मारा, फिर रजिया गद्दी पर बैठी, उसने अपने सौतेले भाइयों को मरवा दिया, रजिया भी मारी गयी, उसका पति भी मारा गया फिर बलवन राजगद्दी पर बैठा, बलवन ने अपने दोनों दामादों को मरवा दिया और इस

तरह से गुलाम वंश का नाश किया | उसके बाद खिलजी वंश आया | अलाउद्दीन ने प्रयाग के पास कड़ा में जलालुद्दीन का सिर काटा यानी भारत का इतिहास बताया जाय तो गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश, लोदी वंश, मुग़ल वंश, इन सबका इतिहास रक्त-रंजित है | अकबर ने भी अपने सौतेले भाई को समाप्त करवाया | अकबर हो, चाहे जहाँगीर हो, चाहे शाहजहाँ हो, चाहे औरंगजेब हो, इन सबने अपने भाइयों की हत्या करवाई | अँधा करके बुरी तरह से, इतनी क्रूरता और राज्य के लिये जो छल-लिप्सा की गयी तो "यथा राजा तथा प्रजा" के अनुसार वैसे ही प्रजा हो गयी | यह निश्चित बात है कि राज्य सत्ता जब दूषित हो जाती है तो प्रजा-सत्ता अवश्य नष्ट हो जाती है, इसलिये भारतवर्ष मिट्टी में मिल गया | अब प्रजातंत्र में तो राज्य-सत्ता का सुधार होना मुश्किल है | हम अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं | जब राजा वोटों के लिये भीख माँगेगा तो क्या शासन करेगा ? जब भीख माँगेगा तो भिखमंगा शासन नहीं कर सकता, जनता को नैतिकता नहीं सिखा सकता, उसको तोषण करने के लिये, तुष्टीकरण करने के लिये सब नाटक करने पड़ते हैं तब वोट इकट्ठा होता है | इस संबंध में हम किसी व्यक्ति विशेष पर आक्षेप नहीं कर रहे हैं और न ही किसी राजनीतिक पार्टी से हमारा प्रेम है | हमारा कहना है कि प्रजातंत्र मे नैतिकता का सुधार होना असंभव है | यही कारण है कि दिन पर दिन नैतिकता का विनाश होता जा रहा है | हमने वह भी समय देखा जब नेहरूजी प्रधानमंत्री थे, उस समय हम विद्यार्थी थे और इलाहाबाद में हमारा घर था | जब वह इलाहाबाद आते थे तो हम लोग उनका भाषण सुनते थे | नेहरू के निवास स्थान आनंद भवन के सामने ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्थित था | छात्रों का उस समय एक संगठन था और हम लोगों ने के.एन.मुंशी के खिलाफ आंदोलन छेड़ा था, उन्होंने छात्रों का फेडरेशन तोड़ दिया था तो हमलोगों ने आनंद भवन, नेहरु जी का बंगला घेर लिया था | अकेले ही वह इतने हिम्मती थे कि छात्रों से बोले कि आप अपना डेलिगेशन बनाकर आइये और फिर हम आपसे बातचीत करेंगे तो उस समय की नैतिकता का स्तर कितना ऊँचा था और प्रजातंत्र में कुछ आशा दिखाई देती थी, आज तो कुछ भी आशा नहीं रही क्योंकि न किसी पार्टी का वर्चस्व है, केवल छल रह गया है - हम तुमको मिलावें, हम तुमको फोड़ लें, तुम हमको फोड़ लो; इस तरह से प्रजातंत्र जिस रूप में पहुँच गया है, उस जगह से सुधार की कोई उम्मीद दिखाई नहीं पड़ती | यदि कोई हमको गलत कहे तो ठीक है, हम बहस तो नहीं करेंगे लेकिन इतना जरूर हमारा मन कहता है कि दिन पर दिन इसका स्तर जो नीचे जा रहा है उसमें कोई सुधार दिखाई नहीं पड़ रहा है और न कोई आशा दिखाई पड़ रही है | इसलिये हमलोगों को अपने बल पर काम करना चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम निराश हो गए | भगवान् ने गीता में कहा है कि तुम कर्म करो, फल की इच्छा मत करो | इसलिए किसी को निराश तो नहीं होना है और यदि कोई निराश हो गया तो वह भक्त नहीं है | भगवान् गीता में कहते हैं –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

Action is thy duty and reward is not thy concert.

हमको फल की ओर देखना ही नहीं है | कर्म हम कर रहे हैं और बहुत कुछ सफलता भी हमको मिली व मिलती जा रही है तथा हमें विश्वास है कि कुछ समय बाद हम यमुनाजी को भी अपने हाथ में लेंगे जबकि अभी दिखता है कि ये केवल कवि-कल्पना है लेकिन ये केवल

कल्पनाएँ ही नहीं हैं, किसी समय कल्पना लगती थी, ४६ साल तक हमने गह्वरवन के लिये संघर्ष किया, कई बार मुझे लोग मारने आये, मेरे पास रहने वाले सभी लोग हिम्मत हार गए थे और हमसे बोले कि बाबा, आप केवल मरना चाहते हैं | हमने कहा कि हाँ, मैं मरना चाहता हूँ लेकिन एक दिन गह्वरवन अवश्य सुरक्षित होगा |

हम इस विश्वास पर चल रहे हैं, हमने यही बात कांग्रेस पार्टी के नेता अर्जुन सिंह जी से कही थी कि मैं उस बाप का बेटा हूँ जो मदनमोहन मालवीय जी के मित्रों में थे और उन्होंने अंग्रेज अधिकारी यंग साहब के साथ काम किया था, जिसने सुल्ताना डाकू को पकड़ा | उस समय इतनी ऊँची पदवी पर भारतीय लोग नहीं पहुँच पाते थे | सन् १९४२ का स्वतंत्रता आंदोलन हमने देखा है, हमारे पिताजी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के लिये इतनी बड़ी पोस्ट (I.G आफिस के सर्वोच्च अधिकारी) से इस्तीफ़ा दे दिया, इतने बड़े देशभक्त थे वह, लेकिन सन् १९४५ में उनकी मृत्यु हो गई, इतने बड़े त्याग के बाद भारत स्वतंत्र हुआ किन्तु वह देख नहीं पाए | अतः मैं अपने पास के लोगों से कहता हूँ कि मैं उस पिता की संतान हूँ जो अपने जीते जी भारत की स्वतंत्रता को नहीं देख सके, अतः मैं गह्वरवन के लिये संघर्ष कर रहा हूँ, अगर मेरे जीते जी यह सुरक्षित नहीं हुआ तो मेरे मरने के बाद सुरक्षित होगा लेकिन सुरक्षित अवश्य होगा और भगवान् की कृपा है कि मेरे जीते जी गह्वरवन सुरक्षित हो गया | उसी तरह से हमें विश्वास है कि भगवान् है और हम आगे चलकर ब्रज में पर्यावरण की रक्षा के लिये बहुत काम करेंगे बिना सरकार की सहायता के | यद्यपि वृषभानुकुण्ड के जीर्णोद्धार के लिये कुछ सरकारी पैसा आया है, कैसे भी धन आया हो, हम तो न किसी के पास माँगने गए और न कभी जाते हैं | वह धन प्रभु इच्छा से आया है और वृषभानुकुंड की सेवा में लगेगा, प्रेम-सरोवर में लगेगा और अगले साल हम लोग २ करोड़ का ऐसा प्रोजेक्ट बनाने जा रहे हैं कि उसमें हमारी स्वयं की २-३ जे.सी.बी मशीनें होंगी, अपने ट्रेक्टर होंगे तब फिर ब्रज के सरोवरों का जीर्णोद्धार हम अपने द्वारा करा सकेंगे | उसके बाद यदि भगवान् ने चाहा तो हम बड़े-बड़े कार्य जैसे यमुनाजी का शुद्धिकरण भी करेंगे और यदि यमुनाजी में सफलता मिल गयी तो फिर उसका प्रभाव सारे भारतवर्ष में पड़ेगा; ये मेरे विचार हैं | इलाहाबाद में एक स्थान है कृष्ण-कुंज, अब वह नष्ट हो गया, मेरे बचपन में वहाँ कीर्तन करने के लिये आनंदमयी माँ, गाँधी जी, जवाहरलाल नेहरू आदि आया करते थे | मंत्री जी, मेरी ऐसी मान्यता है कि भारत स्वतंत्र हुआ भगवान के नाम से, इस बात को हर आदमी नहीं जानता | मेरे गुरु थे प्रियाशरण बाबा महाराज, १०० साल की उनकी उम्र थी, उनके गुरु थे पंडित रामकृष्णदास बाबा, जो ब्रज के अत्यंत प्रसिद्ध महात्मा थे, वे गिरिराज जी में रहते थे | जिस समय भारत परतन्त्र था तो परेशान होकर गांधीजी और सरदार वल्लभभाई पटेल उनके (पंडित बाबा के) पास ब्रज में आये, उस समय हमारे बाबा (गुरु महाराज) भी वहाँ बैठे थे | गांधीजी ने पंडित बाबा से कहा कि महाराज ! हम भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ रहे हैं, आप भगवान के शुद्ध भक्त हैं, हमें आशीर्वाद दीजिए और यह बताइए कि कब तक हमें सफलता मिलेगी ? पंडित बाबा ने कहा – "गाँधीजी ! भगवान के नाम का आश्रय करिए |" पटेलजी ने कहा था कि भारत की स्वत्रंता के लिए हम गिरिराजजी की मान्यता मानते हैं कि जब भारत स्वतंत्र हो जाएगा तो हम गिरिराजजी की आराधना करेंगे | इस तरह पंडित बाबा से प्रेरणा प्राप्त करके गांधीजी ने नित्य कीर्तन

करना शुरू किया | गाँधीजी ने भारत के उस जमाने के महान संगीतज्ञ विष्णु दिगंबर जी की सहायता से जिस कीर्तन को चयन किया, वह था –

“रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम |”

विष्णु दिगंबर जी उस समय के गायक-सम्राट थे और सारे भारत में उनके संगीत के स्कूल चल रहे थे | इस तरह गाँधीजी ने नित्य ही ‘रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम |’........कीर्तन करना शुरू किया | उसके बाद जब भारत स्वत्रंत हुआ तो सरदार वल्लभभाई पटेल गिरिराजजी आये और उन्होंने आन्यौर के क्षेत्र को सुरक्षित कराकर वहाँ वृक्ष लगवाये लेकिन वे एक साल बाद दिवंगत हो गये, अगर वे जीवित होते तो शायद ब्रज के लिये बहुत कुछ करते | गाँधीजी और पटेलजी के बाद एक भी ऐसा नेता नहीं हुआ, जो नित्य कीर्तन करे | हर नेता अपने को धर्म निरपेक्ष कहने में गौरव महसूस करता है जबकि यह कितनी खोखली बात है | राज्य शासन केवल बाहर नियंत्रण करता है, भीतर नियंत्रण नहीं कर सकता | भीतर नियंत्रण करेगा केवल धर्म | शरीर के भीतर आत्मा नहीं तो शरीर का कोई महत्व नहीं है | कितनी भी बड़ी राज्य सत्ता है, यदि वह धर्मशून्य है तो वहाँ अनैतिकता रहेगी, वहाँ बेइमानी रहेगी और भ्रष्टाचार रहेगा, देशभक्ति नहीं रहेगी | इसलिये धर्महीन राज्य मुर्दा है | महात्मा गाँधीजी ने भगवन्नाम-संकीर्तन किया, भगवान् के नाम का आश्रय लिया, इसीलिये भारत स्वतंत्र हुआ | इस बात पर हमारी दृढ़ आस्था है और आज भी नेताओं में अगर आस्तिकता आ जाए तो भारत न जाने क्या हो जाए ? जब भारत परतंत्र था, उस समय हम इलाहाबाद के कृष्णकुंज (संकीर्तन भवन) में एक गीत गाते थे, उस गीत में कुछ देशहित के बारे में भी ऐसे शब्द आये हैं, वह गीत इस प्रकार है -

मुरली की तान सुनाने को कब आओगे श्याम कदम के तले ||
भारत में मुसीबत आई है,
आफत की घटाएं छाई हैं,
उंगली पर गिरवर उठाने को कब आओगे श्याम कदम के तले |
गौएँ नित भूखी मरती हैं,
नित याद तुम्हें सब करती हैं,
वन-वन में धेनु चराने को कब आओगे श्याम कदम के तले |
ब्रजवासी बहुत दुखारे हैं,
कहते कहाँ श्याम हमारे हैं,
तुम हम पर दया दिखाने को कब आओगे श्याम कदम के तले |
अज्ञानी बनकर सोये हैं,
मर्यादा अपनी खोये हैं,
गीता का ज्ञान सुनाने को कब आओगे श्याम कदम के तले ||

शास्त्र में कहा गया है –**अदृढं च हतं ज्ञानं प्रमादेन हतं श्रुतम् |** (भागवत माहा.५/७३) एक जो बहुत बड़ी कमी है हम लोगों में, उससे भावना (spirit) में दृढ़ता नहीं रहती है, जो चीज अदृढ़ है, वह ‘हत’ अर्थात् मृत है, फल नहीं देगी | खासकर के, हमारे हिन्दू समाज में यह बहुत बड़ी कमी है कि वह राजस-तामस उपासनाएँ करता है, जिसमें हिंसा की प्रधानता है, भगवान् ने गीता में बताया है – (श्रीगीताजी १७/४) सात्त्विक उपासनायें तो दया, अहिंसा को लेकर चलती हैं | राजस, तामस उपासनायें हिंसा को लेकर चलती हैं, वे हिंसा प्रधान उपासना वाले हम लोगों से प्रबल पड़ते हैं और ये सदा से होता आया है | राजस-तामस भाव में हिंसा अधिक होती है, वे दृढ़ता ज्यादा लेकर चलते हैं, इसीलिए हमलोग पिछड़ जाते हैं | जो चीज हम नियमितता (punctuality) के साथ करते हैं, उससे एक spirit (मानसिक शक्ति या दृढ़ता) उत्पन्न होती है और वही चीज लाभदायक होती

है, सफलता देती है | मंत्रीजी, आपका यहाँ (मानमन्दिर में) आना तभी सफल माना जाएगा, जब आप यहाँ से कुछ लेकर जायें और यदि आप खाली चले गये तो हम समझेंगे कि आपका आना भी बेकार रहा तथा मेरा समय भी बेकार गया | ये बात केवल आपके लिए ही नहीं, सभी के लिए है | सारी सृष्टि की नियमितता यदि रुक जाय तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा, जैसे - तारे हैं, सूर्य है, चन्द्रमा है, पृथ्वी का घूमना है, इन सब की क्रियाएं नियमित रूप से होती हैं, अगर इनकी नियमितता रुक जाय तो सारी सृष्टि खत्म हो जाएगी | ब्रह्माण्ड को तो छोड़ दीजिये, आप अपने शरीर को ही ले लीजिये, आपके हृदय की धड़कन नियमित रूप से होती रहती है, आपकी नाड़ी नियमित रूप से कार्य करती है, आपके रक्त का संचालन नियमित रूप से होता है यानि अगर नियमितता नहीं रहेगी तो शरीर को मृतक मान लिया जायेगा | ऐसा नहीं है कि हृदय अब बंद हो गया, एक घंटे बाद काम करेगा | जो चीज नियमित रूप से की जाती है, वह स्वस्थ है और हमको उसका उचित फल, सफलता मिलती है, हम स्वस्थ हैं, हमारा शरीर अच्छा है, सही ढंग से काम कर रहा है, उसमें कोई बीमारी नहीं है क्योंकि उसकी हर क्रिया नियमितता के साथ होती है | यदि आप कोई आराधना करते हैं तो यह बहुत अच्छी बात है, नहीं तो बहुत से लोग तो आराधना नहीं करते हैं | अब उसको आप वक्त की पाबन्दी के साथ, नियमित रूप से, प्रतिदिन करिए तब उसमें कुछ चमत्कार आ जाएगा, एक मानसिक-शक्ति उत्पन्न होगी और वह आपके लिए इतनी बड़ी साबित होगी कि उसको कहा नहीं जा सकता | मैंने अपने अनुभव से ये बात कही कि जब मैं पहली बार ब्रज में आया और बरसाना में मानगढ़ पर रहने लगा तो यहाँ प्रतिदिन कीर्तन करना शुरू किया | जब हम लोग प्रतिवर्ष ४० दिनों की ब्रजयात्रा के लिए मानमन्दिर से ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा करने चले जाते हैं तब भी यहाँ कीर्तन होता है और इसी कीर्तन के बल पर हमने यहाँ बड़े-बड़े डाकुओं का सामना किया, बड़ी-बड़ी आपत्तियों का सामना किया | २-३ दिन पहले हम चौमुँहा गाँव गये थे विशाल जन सभा को संबोधित करने, जब वहाँ से हम आये तो मान मन्दिर के लोग जीप बनवाकर लाये थे मथुरा से, जो मैकेनिक था, वह जल्दी में बोल्ट कसना भूल गया और हम लोग बरसाना ८० किमी प्रति घंटा की चाल से आये | जब यहाँ गाड़ी खड़ी की गयी तो पहिये खुलने लगे और गाड़ी के सारे यंत्र खुल गये | भगवान् ने रक्षा किया नहीं तो बड़ी दुर्घटना हो सकती थी | ये सब हम प्रतिदिन अनुभव करते हैं | अब मेरा जीवन कितने खतरे में रहता है, इसको लोग नहीं समझ सकते | कुछ साल पहले मुझको जहर दिया गया था, पिछले साल मेरे ऊपर हमला हुआ था, जाने क्या-क्या हुआ लेकिन यह मेरा अनुभव है कि यदि नियमितता और दृढ़ता के साथ हम किसी काम को करें तो वह अवश्य हमें लाभदायक साबित होगा | आपको कल्याणकारी बात बताना ही मेरे द्वारा आपका स्वागत है और तो हम कोई चाय आदि रखते नहीं हैं, न किसी को पिलाते हैं तथा आपको इन सब चीजों की जरूरत भी नहीं है, ये मुझे मालूम है | खिलाना-पिलाना आदि क्रियाएँ तो हजारों लोग आपके लिए करते होंगे किन्तु मैं इस रूप में आपका स्वागत करता हूँ और यही स्वागत का सच्चा रूप है, कल्याणमय रूप है कि आप जितने भी श्रोता हैं, अपनी उपासना की नियमितता को न तोड़ें चाहे भोजन छूट जाय, पानी छूट जाय अथवा प्राण छूट जायें | यह सुदृढ़ भावना लेकर यहाँ से जाइए कि जो हमारी ईश्वर आराधना है, वह कभी छूटने न पाये, बस यही मेरा उपहार है, इसको स्वीकार करें |

सर्वोत्तम ब्रजप्रेमिका 'श्रीराधारानी'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' (२७/७/२००६) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी गोविंदीजी, मानमन्दिर, बरसाना

ब्रजधाम की सेवा साक्षात् श्रीकृष्ण करते हैं और ब्रज में ही उन्होंने संसार में दिखाई देने वाले पञ्चतत्त्व का भी शोधन किया। बचपन में ही माटी खाकर उन्होंने ब्रज के भूमितत्त्व का शोधन किया, कालियनाग को नाथकर जल-तत्त्व का शोधन किया, इसके बाद दावानल का पान कर अग्नितत्त्व का शोधन किया, तृणावर्त को मारकर वायु-तत्त्व का शोधन किया और व्योमासुर को मारकर आकाशतत्त्व का शोधन किया। श्रीराधारानी ने तो श्रीकृष्ण से भी अधिक कार्य ब्रज में किया। श्रीकृष्ण ने ब्रजरज के प्रति जो निष्ठा दिखाई, श्रीराधारानी ने उससे कई गुना अधिक अपनी प्रीति इस धाम के प्रति प्रकट की। इसलिए श्रीजी के जितने भी अनन्य उपासक थे, वे उसी पद्धति पर चले, जिस पर श्रीराधारानी चलीं, जिस पर श्रीकृष्ण प्रकट लीला में नहीं चल सके। श्यामसुंदर तो ब्रज से मथुरा गये फिर द्वारिका चले गये किन्तु श्रीजी ब्रज के बाहर नहीं गयीं और उनके साथ जितनी भी सखियाँ थीं, वे भी नहीं गयीं, ये श्रीजी की अनन्य ब्रजनिष्ठा का सबसे बड़ा प्रमाण है। एकबार श्रीजी से कुछ लोगों ने प्रस्ताव किया था कि आप द्वारिका चलिए, आपके प्यारे तो वहाँ हैं। जो राय (सलाह) देने वाले होते हैं, वे कुछ न कुछ प्रेम रखते हैं। श्रीजी की करुणविरहलीला को देखकर उन लोगों ने श्रीजी से द्वारिका चलने का अनुरोध किया था। श्रीजी ने बड़ा सुंदर और मीठा उत्तर दिया – अरे पथिक! तू मुझसे द्वारिका चलने को कहता है, कृष्ण से मिलने को कहता है। **"हौं कैसे के दरसन पाऊँ।"** मुझे उनका दर्शन कैसे हो सकता है? **"सुनो पथिक उई देस द्वारका, जो तुम्हरे संग जाऊँ।"** किसी पथिक ने श्रीजी से कहा कि मैं आपके साथ द्वारका चलूँगा, आपको कोई कष्ट नहीं होने दूँगा। श्रीजी ने कहा कि यदि मैं तुम्हारे साथ जाती भी हूँ तो क्या तुमको पता है कि द्वारिका कैसी है? **"बाहर भीर बहुत भूपन की, बूझत बदन दुराऊँ।"** हम ब्रजवासी हैं, हमारी अपनी ब्रज की संस्कृति है, ब्रज का पहनावा है। (श्रीबाबामहाराज इस प्रसंगवश कहते हैं कि इसीलिए मैं मानमन्दिर में रहने वाली साध्वियों को ब्रज की वेशभूषा लहंगा-फरिया आदि पहनने को कहता हूँ, इसमें गौरव समझना चाहिए क्योंकि श्रीजी यही चाहती हैं, आजकल के आधुनिक परिधान श्रीजी को पसंद नहीं हैं) आगे श्रीजी कहती हैं कि वहाँ बाहर जो राजाओं की भीड़ है, वे हम गोपियों की रहन-सहन को देखकर दौड़ेंगे और सोचेंगे कि ये लोग कहाँ से आयी हैं, ये कौन हैं? उस समय हम लोग उन्हें क्या उत्तर देंगी और यदि हम लोग भीतर भी पहुँच जाएँगी तो **"भीतर भीर भोग भामिनी की"** भीतर महल में उनकी १६,१०८ भामिनियाँ हैं **"तेई ठाक आइ पठाऊँ।"** उस भीड़ में मैं अपनी किस सखी को भेजूँगी, तुम्हीं बताओ। यदि तुम कहते हो कि नहीं, मैं सब प्रबंध कर दूँगा – **"बुधि बल जुक्ति जतन करि, उहि पुर हरि पिय पै पहुचाऊँ।"** यदि कोई ऐसा भी संदेश वहाँ पहुँचा दे तो **"अब बन बसि निसि कुञ्ज रसिक बिन कौने दसा सुनाऊँ।"** वे वृन्दावन की कुंजें, वे वन, वह आनंद, वहाँ मैं उसका कैसे वर्णन कर पाऊँगी और यदि तुम सब प्रबंध कर लेते हो तब भी एक बात सुनो, वह काम तुम नहीं कर सकोगे, उसे श्यामसुंदर भी नहीं कर

पाएँगे | पथिक बोला कि ऐसी कौन-सी बात है जिसे वे नहीं कर पाएँगे | तब राधारानी बोलीं – **“श्रम कै सूर जाऊँ प्रभु पासहि”** यदि मैं वहाँ पहुँच भी जाऊँगी – **“मन में भले मनाऊँ |”** ठीक है मन में तुम्हारा भला ही मनाऊँगी |

“नव किशोर मुख मुरलि बिना, इन नैनन कहा दिखाऊँ |”
इन आँखों से क्या मैं द्वारकाधीश को देखूँगी ? इन आँखों से मैं द्वारकाधीश का दर्शन नहीं कर सकती | दूसरा प्रमाण है रूप गोस्वामीजी के ग्रन्थ उज्ज्वल नीलमणि का | उसमें उन्होंने बहुत सुन्दर प्रसंग लिखा है | एकबार श्रीकृष्ण रास से अंतर्धान हो गये तो ब्रजगोपिकाएँ उन्हें वन-वनान्तर में ढूँढ़ने लगीं | उस समय श्रीकृष्ण गोपियों से कौतुक करने के लिए एक कुञ्ज में अपना चतुर्भुज रूप बनाकर बैठ गये | गोपियाँ हर लता कुञ्ज में कृष्ण का अन्वेषण करती हुई जा रही थीं तो उस कुञ्ज में चतुर्भुज रूप धारी श्रीकृष्ण को देखकर वे रुकी नहीं क्योंकि उनका प्रेम तो श्रीकृष्ण के द्विभुज रूप से था | यह बात ब्रज के सभी रसिकों ने लिखी है कि गोपियाँ इस बात को बार-बार कहती हैं कि हमारा प्यार तो केवल दो भुजा वाले कृष्ण से है –

हमारो मुरली वारो श्याम |
बिन मुरली बनमाल चन्द्रिका, नहिं पहचानत नाम ||
हमारे कृष्ण कहाँ रहते हैं –
नन्दीश्वर गोवर्धन गोकुल, बरसानो विश्राम |
हम लोग बरसाने में रहती हैं जहाँ नित्य ही रस बरसता है, वहाँ ही विश्राम है |
“नागरिदास द्वारिका मथुरा, इनसो कैसो काम ||”
वही बात सूरदासजी लिखते हैं कि राधारानी पथिक से कहती हैं कि यदि तुम हमें द्वारिकाधीश को दिखा भी दोगे तो क्या हमें उनका वह दर्शन मिल जाएगा –

“नव किशोर मुख मुरलि बिना, इन नैनन कहा दिखाऊँ |”
हमारी आँखें तो नंदनंदन के गोपवेश के मुरलीधारी रूप के दर्शन की प्यासी हैं | हम द्वारिका में कृष्ण के चक्रधारी रूप को कैसे देखेंगी और उस रूप में हमारा प्रेम सम्भव ही नहीं है | इसलिए न हम द्वारिका जा सकती हैं और न ही मथुरा जा सकती हैं, हम लोग तो ब्रज की अनन्य उपासिकाएँ हैं | यही बात गोपियों ने उद्धवजी से कहा था – हे उद्धव ! तुम इस बात को समझ लो कि हम लोग ब्रजवासी हैं, हम लोग ब्रज को छोड़कर अन्यत्र नहीं जाते हैं | **“गोकुल सबै गोपाल उपासी |”** गोपियाँ बोलीं – उद्धव ! ब्रजवासी ब्रज के बाहर नहीं जाते हैं | गोपाल का उपासक तो ब्रज में ही रहता है, बाहर के धक्के नहीं खाता है | तुम जो हमें योग आदि साधन करने को कहते हो, यह साधन करने वाले तो हिमालय और काशी आदि अन्य तीर्थों में रहते हैं |

“जे गाहक साधन के ऊधौ, ते सब बसत ईशपुर काशी |”
इस तरह गोपियों की ब्रजनिष्ठा के सैकड़ों पद हैं | इसलिए इस ब्रजरज की सच्ची उपासिका श्रीराधारानी हैं | रामावतार और कृष्णावतार में यही अंतर है | रामावतार में राम अयोध्या में रहे और सीताजी अंतिम समय में वाल्मीकिजी के आश्रम में रहीं, लोकनिंदा के भय से उनका त्याग कर दिया गया | इसीलिए आज भी जो आनंद वृन्दावन में है, वह अयोध्या में नहीं है | आप स्वयं अयोध्या और वृन्दावन जाकर देख सकते हैं | जहाँ से श्रीजी चली जाती हैं, वहाँ अकेले भगवान् क्या करेंगे क्योंकि रसरूपा तो केवल श्रीजी ही हैं |

“शूकर ह्वै कब रास रचायो,
बामन ह्वै कब गोपी नचाईं |”
कृष्णावतार के अतिरिक्त किस अवतार में रस बरसा, किसी अवतार में रस नहीं बरसा |

मीन भये कौन के चीर हरे,

कच्छप भये कब बंसी बजाई |

ह्वै नृसिंह कहो हरि जू तुम,

कौन की छतियन रेख लगाई |

राधे जू प्रगट भई जब ते,

तब ते तुम केलि कला निधि पाई |

प्रकट लीला में श्रीकृष्ण ब्रज के बाहर चले गए तो कोई बात नहीं किन्तु श्रीजी ब्रज में विराज रही हैं तो आज तक ब्रज में ऐसा रस है जो कि किसी धाम में नहीं है |

इसका एक और प्रमाण है भागवत उत्तर माहात्म्य में, वहाँ प्रसंग आता है कि श्रीकृष्ण के नित्यधाम गमन के बाद द्वारिका की रानियाँ वृन्दावन में आयीं | उस समय परीक्षित जी वज्रनाभ सहित रानियों को साथ लेकर यहाँ आये | रानियों ने देखा कि वृन्दावन में यमुनाजी आनन्द के साथ पहले की तरह बह रही हैं | उन्होंने यमुनाजी के आधिदैविक रूप को देखा केवल जल को नहीं देखा क्योंकि जल तो बात नहीं करता है | रानियों ने यमुनाजी से पूछा – हे यमुने ! श्रीकृष्ण तो अंतर्धान हो गए किन्तु तुम्हारे मन में कोई उदासी नहीं है, इसका क्या कारण है ? यमुना जी बोलीं – तुमको पता नहीं, मैं श्रीराधारानी की दासी हूँ और जहाँ राधारानी हैं वहाँ श्रीकृष्ण के साथ विरह का केवल नाटक चलता है | वस्तुतः विरह तो मुझे स्पर्श भी नहीं कर सकता | यमुनाजी ने श्लोक बोला था – (भागवत, उत्तरमाहात्म्य – २/११) श्रीकृष्ण के ब्रज के बाहर जाने के बाद भी श्रीजी ब्रज में ही रहीं | इसलिए श्रीकृष्ण से सौ गुना नहीं, हजार गुना नहीं, लाख गुना काम श्रीजी ने कर दिखाया | इसलिए वे वृन्दावनेश्वरी बोलीं गयीं | इसका दूसरा प्रमाण है कि कुरुक्षेत्र में ब्रजवासियों का श्रीकृष्ण के साथ जो मिलन हुआ उसके बारे में आचार्यों ने अलग ही अर्थ किया है क्योंकि श्रीमद्भागवत को ये आचार्य लोग जैसा समझ सकते हैं वैसा हम लोग नहीं समझ सकते | उन्होंने लिखा है कि ब्रजवासी कुरुक्षेत्र गए अवश्य और उनका श्रीकृष्ण के साथ मिलन भी हुआ लेकिन श्रीजी ने कहा - ये वही कृष्ण हैं और मैं वही राधा हूँ किन्तु उनके मिलन में वह आनन्द नहीं आया जैसा कि तब आता था जब वृन्दावन की कुंजों में वंशी बजती थी | इसी बात को भागवत में आचार्यों ने लिखा है कि श्रीकृष्ण ने गोपियों से सिद्धांत की बात कही कि हममें और तुममें कुछ अंतर नहीं है, हमारा-तुम्हारा कोई वियोग नहीं है, मैं तो सदा तुम्हारे पास में ही हूँ | जब श्रीकृष्ण ने बहुत अधिक उपदेश दिया तो गोपियों ने केवल एक ही श्लोक में उसका उत्तर दे दिया | जो गूढ़ भाव है वह तो व्यंजनावृत्ति से ही भावार्थ स्पष्ट होता है | शब्दार्थ अभिधावृत्ति से आता है, लक्षणावृत्ति से लक्ष्यार्थ आता है तथा व्यंजनावृत्ति से भावार्थ आता है, ऐसा क्यों ? इसका कारण ये है कि जहाँ शब्दार्थ नहीं घटता है तो वहाँ लक्षणा से उसका अर्थ घटाया जाता है | जैसे कोई आदमी साइकिल पर जा रहा है और किसी ने कहा – ओ साइकिल | अब यहाँ साइकिल कोई आदमी तो नहीं है किन्तु लक्षणावृत्ति से अर्थ घटाना पड़ा कि साइकिल माने साइकिल वाला | वहाँ शब्दार्थ फ़ेल हो गया और जहाँ पर लक्षणा भी फ़ेल हो जाती है, वहाँ व्यंजना काम देती है | उपरोक्त श्लोक का शब्दार्थ पहले समझ लीजिए जबकि यहाँ शब्दार्थ फ़ेल हो गया है | अधिकतर लोगों ने इस श्लोक का शब्दार्थ ही लगाया है, वह ठीक नहीं है | पहले तो श्रीकृष्ण ने गोपियों को उपदेश दिया कि जो तुम हो वही मैं हूँ, हमारा-तुम्हारा वास्तव में कोई वियोग नहीं है | जबकि देखा जाये तो प्रेमियों के लिए ये बेमतलब की बातें हैं और श्यामसुन्दर की आदत है कि

ऐसी बातें किया करते हैं, ऐसा नहीं कि केवल ये यहीं की बात है | रास के आरंभ में भी इन टेढ़ी टांग के ठाकुर ने गोपियों के सामने बड़ी तिकड़मबाजी लगाई और कहा कि तुम लोग अपने घर चली जाओ और अपने पतियों तथा उसके परिवार वालों की सेवा करो | यही स्त्रियों का धर्म है | सती साध्वी स्त्रियाँ तो रात के समय परपुरुष से मिलने के लिए बाहर नहीं जाती हैं | इस प्रकार उन्होंने वहाँ भी गोपियों से छल की बातें की थीं किन्तु गोपियों ने प्रणयगीत में उसका ऐसा उत्तर दिया कि श्यामसुंदर चुप हो गये, उनकी वाणी बंद हो गयी और फिर सीधे-सीधे गोपियों के नचाये नाचने लगे | सिद्धांत की बातें बताना, स्त्रीधर्म सिखाना फिर भूल गये, वे समझ गये कि गोपियों के सामने हमारी कुछ चलने वाली नहीं है | इसी प्रकार यहाँ कुरुक्षेत्र में भी गोपियों के सामने उन्होंने भाषण दिया, यह उनकी पुरानी आदत है | उनकी बात सुनकर गोपियाँ बोलीं –

आहुश्च ते नलिननाभ पदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यमगाधबोधैः |
संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/८२/४९)

हे नलिननाभ ! हे कमल के समान नाभि वाले ! आपका जो चरणकमल है, अगाधबोध वाले योगेश्वर अपने हृदय में उसका चिन्तन करते हैं, कैसे चरण हैं, जो संसार के कुयें में गिरे हुए लोगों के लिए अवलंब हैं |

ठीक है, यहाँ तक तो बात घट जाती है | इसके आगे गोपियाँ कहती हैं – **"गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः"** श्यामसुंदर तो गोपियों को बहुत बड़ा सिद्धांत बता गये किन्तु वे बोलीं कि हम तो गेह में रहने वाली हैं अर्थात् अपने घर को नहीं छोड़ सकती हैं | हमारे हृदय में भी आपके श्रीचरणों का उदय हो | अब उन्होंने जो यह कहा – 'गेहञ्जुषाम्' अर्थात् हम तो घर में रहने वाली हैं | यह साधारण अर्थ लगता है | 'गेहञ्जुषाम्' क्यों कहा उन्होंने ? गोपियाँ गृहस्थ तो थीं नहीं | श्रीजी की अष्टसखियाँ थीं, उनके कोई संतान नहीं थी, ब्रजगोपियों की कोई संतान नहीं थी, श्रीजी की कोई संतान नहीं थी, अतः वे गृहस्थी कहाँ थीं, जो नाममात्र की परकीया भाव की गोपियाँ थीं, उनके बारे में भी शास्त्र में लिखा है कि उनका अपने पतियों से अंग-संग नहीं हुआ था, केवल भाव था, वस्तुतः तो उनका सब कुछ श्रीकृष्ण के ही लिए था | अतः उनके लिए 'गेहञ्जुषाम्' अर्थात् वे गृहस्थ थीं, यह अर्थ कैसे बैठेगा, नहीं बैठता है, इसका वास्तविक अर्थ आचार्यों ने बताया है कि गोपियों का घर क्या है ? ब्रजवासियों के घर का तो श्रीकृष्ण ने ही गिरिराज-पूजन के समय नन्दबाबा के सामने खंडन कर दिया है |

न नः पुरो............ | (श्रीमद्भागवतजी १०/२४/२४)

श्रीकृष्ण बोले - हम ब्रजवासियों का तो कोई घर ही नहीं है | इसलिए गोपियों ने श्रीकृष्ण से कुरुक्षेत्र में जो यह कहा कि हम घरों में रहने वाली हैं तो इस 'घर' शब्द का यहाँ क्या अर्थ हुआ ? आचार्यों ने 'घर' शब्द का अर्थ बताया – **"कानन श्रीराधा को घर है |"**

गोपियों द्वारा प्रयुक्त श्लोक में 'घर' शब्द का तात्पर्य 'वृन्दावन' से है |

"वृन्दाटवी नव निकुंज गृहाधिदेव्याः |"

(श्रीराधासुधानिधि – ३०)

निकुंज ही राधारानी के घर हैं, ईंट-पत्थर के बने हुए मकान उनके घर नहीं हैं | अतः इस तरह गोपियों ने कहा कि हम बृज-वृन्दावन धाम को नहीं छोड़ सकती हैं | हम तो उसी धाम में रहने वाली हैं और वहीं रहेंगी, वहीं हमें आपके चरण हृदय में प्राप्त हो जाएँ अर्थात् आपके उसी गोपरूप की हमें प्राप्ति हो जाए | यह श्लोक

(१०/८२/४९) की उस कड़ी का अर्थ है, यह अर्थ आचार्यों ने लिखा है | गोपियों ने श्रीकृष्ण से कहा कि ठीक है, तुम्हारा चरण संसारियों के लिए अवलंबरूप तो है ही | इसे तो गोपियों ने पहले भी कई बार कहा था | गोपीगीत में उन्होंने कहा – **"प्रणतदेहिनां पापकर्शनम् |"** लेकिन पापकर्शनं कहने का मतलब यह नहीं है कि गोपियों के पास पाप है | उनके पास पाप कहाँ से हो सकता है ? गोपियाँ कहती हैं – हे कृष्ण ! तुम्हारे चरणों की यह विचित्र विशेषता है कि जो इनकी शरण में आता है, उसके पापों को तुम खींच लेते हो किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि ब्रज में पाप हो रहा है, अतः तुम हमारे भी पापों को खींच लो | गोपियों ने श्रीकृष्ण से कहा कि ठीक है, आपके चरणकमल संसार कूप में गिरे हुए लोगों के लिए अवलंब हैं किन्तु हम तो धाम की निवासिनी हैं | इस श्लोक का यथार्थ अर्थ यह हुआ | इस प्रकार प्रकट लीला में ब्रज के प्रति जो निष्ठा श्रीजी ने दिखाई, श्यामसुंदर तो वह दिखा ही नहीं सके, वे तो भगोड़े थे, ब्रज से ही भाग गये | धाम में जमकर रहने वाली श्रीजी हैं | यह उनके द्वारा ब्रजरज के प्रति निष्ठा द्वारा पृथ्वीतत्त्व का भी शोधन हो गया | कालियनाग को नाथ कर श्रीकृष्ण ने जलतत्त्व का शोधन किया था, उससे बहुत अधिक आगे का कार्य श्रीजी ने किया, इसका भी प्रमाण सुनिये - अरिष्टासुर ब्रज का नाश करने के लिए आया था, वह बैल का रूप बनाकर आया था, श्रीकृष्ण ने उसका वध कर दिया | जब श्रीकृष्ण रात को रास में आये तो सब गोपियों ने कहा कि इन्हें मत छुओ | इस प्रकार सभी गोपियों ने श्रीकृष्ण का बहिष्कार कर दिया | श्यामसुंदर रास में नाचने-कूदने के लिए बहुत बनठन कर आये थे किन्तु सब गोपियों ने उनका स्पर्श करने से ही मना कर दिया | श्यामसुंदर ने पूछा कि तुम लोग ऐसा क्यों करती हो तो गोपिकाओं ने कहा कि तुमने गो हत्या की है | गोविन्द ने पूछा कि मैंने गो हत्या कहाँ की है तो गोपियों ने कहा कि तुमने अरिष्टासुर का वध किया जबकि वह बैल बनकर आया था | श्रीकृष्ण बोले कि वह तो असुर था इसलिए मैंने उसको मारा, तुम लोगों की रक्षा की, सारे ब्रज की मैंने रक्षा की | गोपियाँ बोलीं कि कुछ भी हो, उसका रूप तो बैल का ही था और तुमने उसका वध कर दिया इसलिए हम लोग तुम्हारा स्पर्श नहीं करेंगी | ऐसी गोभक्ति ब्रज गोपियों और श्रीजी में थी | उन सभी ने श्रीकृष्ण को बहिष्कृत कर दिया | वे बोले कि अब मुझे क्या करना चाहिए, आप लोग मुझे कैसे अपनायेंगी ? गोपियों ने कहा कि उस हत्या का प्रायश्चित करो, तब तुम हमारे पास आ सकते हो, हमारा स्पर्श कर सकते हो नहीं तो तुम हमें छू भी नहीं सकते हो | इसके लिए सबसे पहले तुम पृथ्वी के समस्त तीर्थों में जाकर स्नान करके आओ | श्यामसुंदर बोले – देखो जी, मैं तो समस्त तीर्थों में स्नान कर भी आऊँगा लेकिन तुम लोग मेरे ऊपर विश्वास नहीं करोगी, कह दोगी कि नन्द का लाला झूठे ही हमें बहका रहा है | इसलिए मैं यहीं सब तीर्थों को बुलाता हूँ और तुम्हारे सामने संसार के सारे तीर्थ आएंगे और फिर मैं उस तीर्थ जल में स्नान करूँगा, जिससे तुमको विश्वास हो जाये | इसके बाद श्रीकृष्ण ने पृथ्वी के सारे तीर्थों का आवाहन किया और सारे तीर्थ कृष्ण कुण्ड में आ गये और कहने लगे कि मैं काशी हूँ, कोई कहता कि मैं प्रयाग हूँ, मैं नैमिषारण्य हूँ, इस प्रकार अपना-अपना परिचय देकर समस्त तीर्थ कृष्णकुण्ड में आने लगे | अब श्रीकृष्ण ने कृष्ण कुण्ड में गोता लगाया और गोपियों से कहा कि

अब तुमको विश्वास हुआ कि मैं पवित्र हो गया हूँ| गोपियाँ बोलीं – हाँ, अब तुम पवित्र हो गये हो | श्रीकृष्ण ने गोपियों से कहा कि अब तुम लोग भी मेरे कुण्ड में स्नान करो | गोपियाँ बोलीं कि इस कुण्ड में तो तुमने अपना पाप धोया है अतः हम तुम्हारे पाप धोये हुए कुण्ड में स्नान नहीं करेंगी | इसके बाद ब्रजदेवियों ने श्रीजी से कहा कि आप एक कुण्ड बनाओ जो श्यामसुंदर के कुण्ड से कई गुना अच्छा हो तब श्रीजी ने अपने कंकण से खोदकर राधा कुण्ड बनाया | अब तो श्यामसुंदर का चेहरा उतर गया और वह श्रीजी से बोले कि यदि आप मेरे कुण्ड में स्नान नहीं करोगी तो फिर इस कुण्ड में कोई नहीं नहायेगा | तब श्रीजी ने कहा कि तुम घबराओ नहीं, हम लोग तुम्हारा भी सम्मान करेंगी, ऐसा कहकर श्रीजी ने राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड के बीच की दीवार को फोड़ दिया और दोनों कुण्डों को मिला दिया तथा यह कहा कि जो राधाकुण्ड में स्नान करेगा, उसे कृष्णप्रेम मिलेगा | इस प्रकार श्यामसुंदर ने ब्रज में जो जलतत्त्व का शोधन किया, उससे हजार गुना अधिक जलतत्त्व का शोधन श्रीजी ने राधाकुंड बनाकर किया | इसीलिए राधाकुंड की बहुत अधिक महिमा है |

....

परमप्रेमप्रदायिनी 'श्रीधाम में आराधना'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' (२८/१२/१९९८) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी दयाजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमद्राधासुधानिधि ग्रन्थ में कहा गया है कि महद्वृन्दों (महापुरुषों) के समूह को छोड़कर एकमात्र वृन्दाटवी (धाम) का आश्रय ले लो क्योंकि यहाँ श्रीराधा नामक एक निधि रहती हैं | गिरिराज-पूजन के समय स्वयं श्रीकृष्ण ने वृन्दाटवी की महिमा बताते हुए नंदबाबा से कहा था कि सौ अश्वमेध यज्ञ करने से एक इंद्र बनता है |

अश्वमेध शत ते लहै, इन्द्रासन को भोग |
ब्रज रज कण पावै नहीं, कोटि यज्ञ तप योग ||

कोटि-कोटि यज्ञ करने पर भी ब्रज के एक रजकण का मिलना दुर्लभ है | इसलिए हे बाबा ! आप अब इंद्र का पूजन करना बंद करके गिरिराजजी का पूजन करो | इस तरह ठाकुरजी ने देव-पूजन के स्थान पर धाम-निष्ठा की स्थापना की | आचार्यों ने बताया है कि श्रीकृष्ण-उपासना में धाम-निष्ठा स्वयं श्रीकृष्ण ने प्रवर्तित की और इसीलिए ब्रजोपासना में धाम का विशेष महत्त्व है | जब कन्हैया छोटे-से थे, तभी उन्होंने ब्रजरज की महत्ता स्थापित करने के लिए ब्रज की माटी खायी थी और अंत में उन्होंने ब्रजवासियों से गिरिराजजी का पूजन कराया | ये ब्रज की निष्ठा है कि चिदानंद, चिन्मय वपु भी छोड़कर ब्रज के प्रति निष्ठावान लोग ब्रज की इसी रज के एक कण में रहना चाहते हैं, यह एक बड़े आश्चर्य की बात है, वे भगवान् से प्रार्थना करते हैं – प्रभो ! हमें यहाँ का मनुष्य भी नहीं, ब्रज का एक कीड़ा बना दो | रसिक लोग कहते हैं – **"वृंदारण्ये वरं स्यां कृमिरपि परतो नो चिदानंददेहो"** ब्रज का एक कीट बनना अच्छा है किन्तु ब्रज के बाहर हमें चिदानंद शरीर भी नहीं चाहिए |

रंकोऽपि स्यामतुल्यः परमिह न परत्राद्भुतानन्तभूतिः |
शुन्योऽपि स्यामिह श्रीहरिभजन लवेनातितुच्छार्थ मात्रे लुब्धो नान्यत्र गोपीजनरमणपदाम्भोजदीक्षा सुखेऽपि ||

(शतक २/१)

यहाँ (ब्रजभूमि में) अत्यंत दरिद्रतापूर्ण जीवन भी अच्छा है किन्तु बाहर की दिव्य विभूतियों की भी इच्छा नहीं है | यहाँ (ब्रज में) हरिभजन से शून्य होकर घोर वैषयिक जीवन भी अच्छा है किन्तु गोपीजनवल्लभ की चरण-शरण छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना चाहता, शतककार ने यह घोषणा की है | यह तो आचार्यों की बात थी क्योंकि धाम के विषय में तीन प्रकार की उक्तियाँ होती हैं – एक तो भगवान् की (स्वयं राधाकृष्ण कहते हैं), दूसरी आचार्यों की और तीसरी साधकों की | अब यह विचार करना है कि स्वयं श्रीकृष्ण क्या कहते हैं; इस धाम के बारे में | आचार्यों की तो यह उक्ति है; जैसे - वृन्दावन शतककार ने कहा कि जो आचार्य कृष्णभक्ति लुटाते थे, वे तो अब पृथ्वी से चले गये |

दूरे चैतन्यचरणाः कलिराविरभून्महान् |
कृष्णप्रेमा कथं प्राप्यो विना वृन्दावने रतिम् ||

(श्रीवृन्दावनमहिमामृतम्)

श्रीचैतन्यमहाप्रभु आदि प्रेम लुटाने वाले आचार्य तो अब संसार से चले गये | **"कथं कृष्णप्रेमप्राप्तिर्विना वृन्दावन रज सेवया"** अब धाम के बिना तुमको कृष्ण प्रेम कैसे मिलेगा ? धाम-सेवन से ही इष्ट-प्रेम की प्राप्ति हो जाएगी | अब श्रीकृष्ण की बात यह है कि धाम का महत्त्व स्वयं उन्होंने अपने श्रीमुख से दाऊजी से प्रकट किया है, यह प्रसंग श्रीमद्भागवत में है, उन श्लोकों पर समस्त आचार्यों ने बहुत सुंदर लिखा है, इन श्लोकों का महत्त्व बताया है; जैसे - जीवगोस्वामीजी ने अपनी "वैष्णवतोषिणी" नामक भागवत टीका में इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला है, इसी प्रकार अन्य टीकाकारों ने भी धाम-महिमा से सम्बंधित इन श्लोकों की व्याख्या की है | प्रसंग ये है कि दोनों भैया कृष्ण और बलराम वृन्दावन में विचरण कर रहे हैं | वहाँ श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई से बोले – दाऊ भैया ! तनिक इस वन को तो देखो |

अहो अमी देववरामरार्चितं
पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन -
स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/५)

एतेऽलिनस्तव यशोऽखिललोकतीर्थं
गायन्त आदिपुरुषानुपदं भजन्ते ।
प्रायो अमी मुनिगणा भवदीयमुख्या
गूढं वनेऽपि न जहत्यनघात्मदैवम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/६)

नृत्यन्त्यमी शिखिन ईड्य मुदा हरिण्यः
कुर्वन्ति गोप्य इव ते प्रियमीक्षणेन ।
सूक्तैश्च कोकिलगणा गृहमागताय
धन्या वनौकस इयान् हि सतां निसर्गः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/७)

श्रीमद्भागवतजी (१०/१५/५,६,७,८) में धाम-महिमा के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण की वाणी है | आचार्यगण लिखते हैं कि दाऊजी का ध्यान वन की शोभा पर नहीं था | इसीलिए श्रीकृष्ण वन के सौन्दर्य की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करा रहे हैं | वृन्दावन के वृक्ष चिन्मय हैं | जैसे किसी को फल-फूल भेंट करना है तो उसके लिए डलिया चाहिए | वृक्षों के ऊपर जो लाल-लाल पल्लव थे, उसकी उन्होंने डलिया बनायी | जैसे कोई लाल रंग की डोलची हो और अच्छे-अच्छे फल-फूल उन्होंने उस डलिया में रखे, इस प्रकार अपने मस्तक पर भेंट की सामग्री रखकर सभी वृक्ष झुके और झुकने के बाद श्रीकृष्णबलराम के चरणों में भेंट करने लगे, ये है वृन्दावन की लीला –

स तत्र तत्रारुणपल्लवश्रिया फलप्रसूनोरुभरेण पादयोः । स्पृशच्छिखान् वीक्ष्य वनस्पतीन् मुदा स्मयन्निवाहाग्रजमादिपूरुषः ॥ (श्रीमद्भागवतजी १०/१५/४)

इस श्लोक में किसी एक वृक्ष का उल्लेख नहीं किया गया

है | जिधर से भी दोनों भैया निकलते हैं, उधर ही कौतुक होता है | इसे देखकर आश्चर्य करते हुए अपने अग्रज बलरामजी से आदिपुरुष श्रीकृष्ण बोले | यहाँ टीकाकार लोग लिखते हैं कि बलरामजी का ध्यान वृक्षों-लताओं की सेवा की ओर नहीं था; इसीलिए श्रीकृष्ण उन्हें वृन्दावन की महिमा का बोध करा रहे हैं | अब प्रश्न यह हुआ कि कृष्ण तो छोटे भाई हैं | छोटे भाई द्वारा बड़े भाई को बोध कराने के कारण श्रीकृष्ण के लिए यहाँ शब्द आदिपुरुष लिखा हुआ है | व्यूहांगी श्रीकृष्ण ही वासुदेव तत्त्व हैं; इसलिए इन्हें आदिपुरुष कहा गया कि इनके द्वारा बलरामजी को बोध कराना उचित ही है | इसमें कोई शंका की बात नहीं है तथा सख्य रस में तो कुछ भी अनुचित नहीं है | इस प्रकार टीकाकारों ने कई समाधान किये हैं | सख्य रस में तो ग्वालबाल श्रीकृष्ण से कहते हैं – **"खेलत में को काको गुसैंया |"**

यह ऐसा रस है कि श्रीकृष्ण बलराम दोनों नट के समान साथ-साथ नाचते हैं | यहाँ बड़े-छोटे का कोई प्रश्न नहीं है | दोनों ही गीत गाते हुए अपने सखाओं को रिझाते हैं | ग्वाललीला में कृष्ण बार-बार मैया से बलरामजी की शिकायत करते हैं – **"मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो |"** वृन्दावन में विचरण करते समय श्रीकृष्ण बलरामजी से कहते हैं –

अहो अमी देववरामरार्चितं पादाम्बुजं ते सुमनः फलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्त- मोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/५)

अहो, (आश्चर्य है) टीकाकारगण लिखते हैं कि श्रीकृष्ण ने 'अहो', (आश्चर्य है) क्यों कहा ? ऐसा इसलिए कहा क्योंकि श्रीकृष्ण वृन्दावन को देखकर तो आश्चर्य व्यक्त कर ही रहे हैं, साथ ही दाऊजी के प्रति भी आश्चर्य कर रहे हैं कि वृन्दावन के सभी वृक्ष उपासना कर रहे हैं किन्तु दाऊजी उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, उनका ध्यान कहाँ है ? इसीलिए उपरोक्त श्लोक और उसके अगले श्लोक में श्रीकृष्ण बलरामजी से कहते हैं कि आप तो उपासकों की ओर बहुत ध्यान देते हैं किन्तु अहो अर्थात् आश्चर्य है कि इस समय आप इन पर ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं ? श्रीकृष्ण कहते हैं – "हे दाऊ ! वृन्दावन के इन वृक्षों को देखो |" 'हे देववर !' यहाँ कुछ आचार्यों ने देववर को बलरामजी के प्रति संबोधन माना है किन्तु अधिकतर आचार्यों ने 'देववरामरार्चितम्' को एक पद माना है जिसका अर्थ होता है कि आपके चरणों की देववर अर्थात् देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्मादि भी तथा अमर अर्थात् मुक्त लोग भी उपासना करते हैं तथा अब वृन्दावन के इन उपासकों को देखो कि ये वृक्ष फल-फूल से पूजा करते हुए आपके चरणों में नमन कर रहे हैं | क्यों ? अपने 'तम' को दूर करने के लिए और इसीलिए इन्होंने वृन्दावन में 'तरु-जन्म' लिया है | अब यहाँ पर यह शंका होती है कि वृन्दावन में 'तम' कहाँ है क्योंकि यहाँ तो धाम का चिन्मयत्त्व स्थापित किया जा रहा है कि यह धाम चिन्मय है, गुणातीत है, यहाँ पर माया भी नहीं है | भगवान् का धाम तो मायातीत है फिर यहाँ 'तम' कहाँ से आ गया तो इस शंका का बड़ा सुन्दर समाधान किया जीव गोस्वामीजी ने वैष्णवतोषणी टीका में, वह लिखते हैं – 'शिखाभिरात्मनः' अर्थात् वृक्ष अपनी शिखाओं से भेंट कर रहे हैं | यहाँ 'आत्मनः' का सम्बन्ध तम से नहीं है | वृन्दावन के वृक्ष 'तम' दूर कर रहे हैं, किसका 'तम' दूर कर रहे हैं, अपना 'तम' नहीं | जीव गोस्वामीजी लिखते हैं – **'श्रण्वतां पश्यतां तमः'** अर्थात् जो लोग इस ब्रज-वृन्दावन धाम का दर्शन करते हैं, इसकी महिमा का श्रवण करते हैं, यहाँ के वृक्षों की महिमा का श्रवण करते हैं तो उनका 'तम' ये दूर करते हैं | जब हम लोग सत्संग में ब्रजधाम की, यहाँ के वृक्षों-लताओं की चर्चा करते और उसका श्रवण करते हैं तो इससे हमारा 'तम' दूर होता है | इसलिए

अहो अमी देववरामरार्चितं
पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन -
स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥ (श्रीमद्भागवतजी १०/१५/५)

श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'आत्मनः' का सम्बन्ध 'तम' से नहीं लगाना चाहिए, ऐसा करना शास्त्र के विरुद्ध है और हर तरह से विरुद्ध है; इसके प्रमाण के लिए भागवत के दशम स्कंध के १२ वें अध्याय को देखें, इसमें ७ वें श्लोक से लेकर १० वें श्लोक तक श्रीकृष्ण की सखाओं के साथ विविध गोप क्रीड़ाओं का वर्णन किया गया है | कई ग्वालबाल वंशी बजा रहे हैं तो कुछ भँवरों के साथ तान मिला रहे हैं, ऐसे वे गायक हैं | कोयलें कूज रही हैं तो कुछ ग्वालबाल उनके साथ होड़ कर रहे हैं | कुछ गोपबालक बगुलों की तरह ध्यान लगा रहे हैं | कहीं मयूरों के साथ सब नृत्य कर रहे हैं तो कहीं वृन्दावन के बंदरों और उनके बच्चों के साथ खेलने लगते हैं, उनकी पूँछ पकड़कर खींचते हैं | कहीं तालाबों में मेंढकों के साथ कूद रहे हैं, कभी-कभी यमुना किनारे खड़े होकर जल में पड़ने वाली अपनी छाया को देखकर हँसते हैं और उसकी नक़ल करते हैं | अब आगे के श्लोक में शुकदेवजी वर्णन करते हैं कि वृन्दावन के वृक्ष कैसे हैं ? वे कहते हैं –

यत्पादपांसुर्बहुजन्मकृच्छ्रतो धृतात्मभिर्योगिभिरप्यल-भ्यः ।
स एव यद्दृग्विषयः स्वयं स्थितः किं वर्ण्यते दिष्टमतो व्रजौकसाम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१२/१२)

इस श्लोक के टीकाकारों ने दो अर्थ किये हैं | 'यत्पादपांसु' शब्द का एक अर्थ तो यह किया है – 'जिन श्रीकृष्ण की चरणरज |' 'पाद' - चरण और 'पांसु' – 'धूलिकण |' बड़े-बड़े सिद्ध योगी, जिन्होंने कोटि-कोटि वर्षों के साधन के बाद अपने मन को वश में कर लिया है, चित्तवृत्तियों का निरोध कर लिया है, उनके लिए भी जिन श्रीकृष्ण की चरणरज अलब्ध (अप्राप्त) है | गौड़ेश्वर संप्रदाय के आचार्य विश्वनाथ चक्रवर्ती और जीव गोस्वामी जी ने इस श्लोक का बहुत सुन्दर किन्तु भिन्न अर्थ किया है, वे कहते हैं कि इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'पादपांसु' का अर्थ 'श्रीकृष्ण की चरण रज' तो सामान्य है, इससे धाम की महिमा का प्रकाश कहाँ हुआ ? 'भगवान् की चरणरज' बड़े-बड़े योगियों के लिए अत्यधिक दुर्लभ है, इस अर्थ से तो केवल श्रीकृष्ण के चरणों की महिमा प्रकट होती है, धाम की महिमा कहाँ प्रकट होती है ? ये आचार्य यत्पादपांसु का अर्थ इस प्रकार मानते हैं – 'यद् पादप अंशु' और श्लोक के शेष पद को वे ज्यों का त्यों मानते हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि जिस वृन्दावन के पादप (वृक्षों) की, 'अंशु' का अर्थ है - एक किरण, अर्थात् ब्रज के वृक्ष चिन्मय हैं, जड़ नहीं हैं, ये प्रकाशवान हैं, ज्योतिष्मान हैं | जिन वृन्दावन के पादप (वृक्षों) की अंशु (एक किरण) को भी देखना कोटि-कोटि साधन संपन्न सिद्ध योगियों के लिए भी दुर्लभ है | इस धाम के प्रकाश का पुंज तो दूर, यहाँ की एक किरण भी वे नहीं देख सकते | यहाँ की एक किरण का दर्शन भी बड़े-बड़े योगियों को नहीं हो सकता, ऐसा यह ब्रजधाम है | श्रीकृष्ण ने यहाँ दाऊ जी से कहा – हे दाऊ ! इन वृन्दावन के वृक्षों को देखो | इसी भाव को लेकर वृन्दावन शतककार लिखते हैं कि वृन्दावन के वृक्षों को 'तरु' और 'द्रुम' क्यों कहा जाता है ? वृन्दावन के वृक्षों को द्रुम इसलिए कहा गया है क्योंकि ये श्रीकृष्ण प्रेम में 'द्रवन्ति हरि भावतः' द्रवित होने लग जाते हैं | जब यहाँ के वृक्ष श्रीकृष्ण की वंशी ध्वनि सुनते हैं अथवा जब श्रीराधारानी इनके बगल से होकर जाती हैं तो इनसे अपने आप मधुस्राव होता है, मधुधारा बहने लगती है | ऐसा वर्णन भागवत में कई जगह आता है जैसे जब श्रीकृष्ण ब्रज के दिव्य पर्वतों पर खड़े होकर बांसुरी बजाते हैं तो - (श्रीमद्भागवतजी १०/३५/९)

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।

प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥ ब्रज-वृन्दावन धाम की जितनी भी लताएँ हैं, वंशी नाद के द्वारा उनके भीतर श्रीकृष्ण प्रवेश कर जाते हैं| इस श्लोक में श्रीकृष्ण को विष्णु इसलिए कहा गया क्योंकि वंशी रव के द्वारा श्रीकृष्ण ही सर्वत्र व्याप्त हो गये, सारे वृन्दावन में, यमुना जल में, पर्वतों में, लताओं-वृक्षों में व्याप्त हो गये | इसको प्रदर्शित करने के लिए शुकदेवजी कहते हैं कि वृन्दावन के वृक्ष और लताएँ दिखा रहे हैं कि हमारे भीतर युगल सरकार आ गये हैं, प्रकट कर रहे हैं कि हमारे भीतर श्रीकृष्ण हैं | कैसे पता ? पेड़ में नीचे जड़ से लेकर ऊपर तक फल और फूल ही हैं, कहीं डालों का दर्शन नहीं हो रहा है, ऐसी सजी हुई वृन्दावन के वृक्षों और लताओं की पंक्तियाँ हैं | अनंत पुष्प और फल को लेकर प्रत्येक लता और वृक्ष खड़े हैं और ये दिखा रहे हैं कि श्रीकृष्ण हमारे भीतर हैं | आगे के श्लोक में कहा गया है - प्रणतभारविटपा मधुधाराः जबकि कायदे से यहाँ यह शब्द होना चाहिए – भारप्रणतविटपा अर्थात् जो लताएँ भार से झुक गयी हैं जैसे बहुत से फल हो जाएँ तो उनके बोझ से डाल झुक जाती है, अतः व्याकरण से यह नियम बनता है - 'भारप्रणतविटपा' कहना चाहिए किन्तु यहाँ युगलगीत में गोपियाँ कह रही हैं कि नहीं-नहीं, ऐसा मत कहो भार से झुकना तो संसार में प्राकृत वृक्षों में भी हो जाता है | जब बहुत आम लग जाते हैं तो उनके बोझ से डाल झुक जाती है, ऐसा वृन्दावन में नहीं है इसलिए यहाँ 'प्रणतभारविटपा' कहो | लताएँ यहाँ प्रेम के बोझ से इतनी झुक गयी हैं, यह प्रणति का भार है क्योंकि सामने से युगल सरकार आ रहे हैं, उनको देखकर लताएँ झुक रही हैं अतः ये प्रणति के भार से युक्त विटप हैं | 'भारप्रणत' नहीं बल्कि 'प्रणतभार' हैं, ऐसी वृन्दावन की लताएँ हैं | जिस हृदय में राधारानी और श्रीकृष्ण रहते हैं, वहाँ स्वतः ही दैन्य का विकास होता है | इन वृन्दावन के वृक्षों को दैन्य सिखाना नहीं पड़ता, जैसे - हम लोगों को सिखाना पड़ता है – तृणादपि सुनीचेन – तिनके से भी अधिक छोटे बनो, दैन्य सीखो, अमानी बनो, मानद बनो | ऐसा वृन्दावनधाम में सिखाया नहीं जाता, यह तो स्वतः प्रेम का स्वरूप है कि जिस धाम में प्रेम अनंत सर्वशक्तिमान को भी प्रणति में ला देता है | इसलिए इन वृन्दावन के वृक्षों को 'प्रणतभारविटपा' कहो न कि 'भारप्रणत' | अब इसका प्रमाण क्या है ? वृन्दावन के वृक्ष भार से नहीं झुके हैं, यहाँ की लताएँ भार से नहीं झुकती हैं, ये तो प्रेम के भार से युक्त हैं, इसके प्रमाणस्वरूप इसी श्लोक में आगे कहा गया है – 'प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म |' हर लता और वृक्ष युगलसरकार की सेवा के लिए मधुधारा बहा रहे हैं | किसी ने कहा कि शहद बहा रहे हैं तो हो सकता है कि वृन्दावन की भूमि बहुत सरस है अतः वंशी की मधुर तान से ऐसा हो गया होगा या रस के आधिक्य से भी शहद बढ़ जाता है | ऐसी बात नहीं है, यदि तुम ऐसा कहते हो तो इसका मतलब यह है कि अभी तुम वृन्दावन का महत्त्व नहीं समझे हो | वस्तुतः यहाँ भी यही बात है जैसे प्रणतभारविटपा में हुआ था वैसे ही यहाँ भी 'मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म |' रसाधिक्य की बात नहीं है, प्रेम तत्त्व ही लताओं और वृक्षों के भीतर आकर द्रवित हो रहा है | इसीलिए शतककार ने कहा था – **द्रवन्ति हरिभावतस्तरणतारणेअति क्षमः** - ये जो लताएँ हैं, ये प्रेम के हर्ष से रोमांचित होकर मधुधारा बहा रही हैं | ब्रजगोपियाँ कह रही हैं कि जब युगल सरकार आते हैं तो उनको आते देखकर वृक्षों और लताओं में दिव्य प्रेम की बाढ़ छा जाती है | इसके कई प्रमाण हैं | जैसे रास में

श्रीकृष्ण के अंतर्धान होने पर उनका अन्वेषण करती हुई गोपियाँ वृक्षों-लताओं को देखकर कहती हैं –

बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो
रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ।
अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं
किं वाभिनन्दति चरन् प्रणयावलोकैः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/१२)

जिधर-जिधर से राधिका रानी और श्रीकृष्ण जा रहे हैं, उधर-उधर से सब लता और वृक्ष उन्हें प्रणाम कर रहे हैं और युगल सरकार अपनी दृष्टि से उन्हें देखकर उनके प्रणाम को स्वीकार कर रहे हैं, देख लेते हैं, बस यही उनकी स्वीकृति है | गोपियों ने देखा कि एक ओर के वृक्ष झुके हुए हैं तो वे समझ गयीं कि युगल सरकार इधर से ही गये हैं, क्यों, इधर अभी ये झुककर उठे हैं, पूरे खड़े नहीं हो पाये हैं | गोपियों को वृक्षों की प्रणति, उनकी झुकन दिखाई पड़ी, लताओं की झुकन, उनकी प्रणाम करने की मुद्रा दिखाई पड़ी इसलिए गोपियाँ आपस में कहती हैं – देखो, इधर से ही राधारानी गयी हैं, इधर से ही श्रीकृष्ण गये हैं, इसका प्रमाण क्या है तो वे बोलीं कि वृन्दावन के वृक्ष और लताएँ कह रहे हैं कि राधारानी इधर से गयी हैं, अपनी प्रिया के कंधे पर हाथ रखकर और एक हाथ से कमल नचाते हुए श्रीकृष्ण इधर से ही गये हैं | उनके पीछे-पीछे भंवरे जा रहे हैं | युगल सरकार को जाते देखकर यहाँ के समस्त वृक्षों और लताओं ने उन्हें प्रणाम किया है | इसीलिए शतककार कहते हैं – 'द्रवन्ति हरि भावतः' अर्थात् श्री हरि के प्रेम से वृन्दावन के वृक्ष और लताएँ द्रवित हो जाते हैं | श्रीमद्भागवत में कई जगह वृन्दावन की चिन्मयता का प्रसंग आया है | स्वयं श्रीकृष्ण

अहो अमी देववरामरार्चितं
पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन -
स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥ ५ ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/५)

श्लोक में बलरामजी से कहते हैं कि आपकी सेवा के लिए ही इन वृक्षों ने वृन्दावन में तरु-जन्म लिया है | विश्वनाथ चक्रवर्ती जी ने इस श्लोक में 'आत्मनः' के साथ 'तम' का अर्थ लगाया है अर्थात् ये वृक्ष अपना भी तम दूर कर रहे हैं | ऐसा अर्थ करने पर तो गड़बड़ हो गया क्योंकि फिर प्रश्न उठता है कि वृन्दावन में तम कहाँ से आ गया तो वह इसका प्रमाण देते हैं कि वृन्दावन में न तो पाप है और न ही तम है किन्तु पाप और अघ का प्रयोग किया जाता है जैसे गोपीजन अन्वेषण के समय राधामाधव की चरण- धूल देखती हैं तो कहती हैं कि इधर से ही श्रीकृष्ण गये हैं और उनकी कोई परम प्यारी उनके कंधे पर हाथ रखकर उनके साथ गयी है | आगे गोपीजन कहती हैं –

धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्मेशौ रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/२९)

इस श्लोक की टीका में प्रत्येक आचार्य ने लिखा है कि ब्रह्माजी और लक्ष्मी जी अपने अघ (पाप) को दूर करने के लिए युगल सरकार की चरण-धूल को अपने सिर पर धारण करते हैं ? अब प्रश्न उठता है कि लक्ष्मीजी तो भगवान् की नित्य संधिनी शक्ति हैं, उनके हृदय में विराजने वाली हैं, स्वर्ण रेखा के रूप में श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल पर निवास करती हैं तो उनमें भला पाप कैसे हो सकता है ? इसका उत्तर ये है कि संसार में दिखाई देने वाला पाप तो न ब्रह्माजी में है, न लक्ष्मीजी में है और न ही शंकरजी में है | विश्वनाथ चक्रवर्तीजी लिखते हैं कि श्रीकृष्णविरह रूपी जो पाप है, श्रीकृष्ण की अप्राप्ति रूपी जो ताप है, श्रीकृष्ण की अप्राप्ति रूपी जो तम है, उसको दूर करने के लिए ब्रह्मा, शिव और लक्ष्मीजी अपने सिर पर युगलसरकार की चरणरज धारण करते हैं | श्रीकृष्ण की प्राप्ति न होने के कारण लक्ष्मीजी अपने में अघ मानती हैं और इसको दूर करने के लिए तप करती हैं | एकाक्षरी कोश में कहा गया है - 'प'- परमेश्वर, 'अप' - जो उससे हटा दे अर्थात् जो परमेश्वर से हटा दे, उसे पाप कहते हैं | कोई भी वस्तु जो परमेश्वर से हटाती है, वह पाप हो जाती है | अतः श्रीकृष्ण बलरामजी से कहते हैं कि नित्य गमनशील न होने के कारण अपने इस 'तम' को दूर करने के लिए ये वृन्दावन के वृक्ष आपको प्रणाम कर रहे हैं, आपका स्पर्श कर रहे हैं |

'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' से ब्रजसीमान्त-क्षेत्र में हुई जनजाग्रति

श्रीबाबामहाराज के 'ब्रजसीमायात्रा-सत्संग'(३१/१०/२००७) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी काजलजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज के शब्दों में –

जब हमने सीमांत ब्रज का सर्वे करने के लिए मानमन्दिर की एक टीम भेजी, यह टीम तीन महीने तक सीमांत ब्रज के स्थलों का सर्वे करती रही और इसके परिणामस्वरूप हमने सीमांत ब्रजयात्रा का कार्यक्रम बना ही लिया | जब हमलोग यात्रा के लिए चलने लगे तो कुछ लोगों ने इस क्षेत्र में बहुत आतंक की सम्भावना व्यक्त की और मुझसे कहा कि उधर आप यात्रा लेकर मत जाइये | हमने कहा कि भय तो वह मनुष्य करता है, जिसके हृदय में पाप होता है, ईश्वर की शरणागति में भय नहीं है, हमारा लक्ष्य शुद्ध और स्वच्छ है |

सतवास

जब बरसाना से हमलोग सीमायात्रा के लिए चले तो पहली बार राजस्थान के सतवास आदि क्षेत्र में पहुँचे | सतवास के अत्यंत प्राचीन सूर्य मन्दिर में मैंने बीजक पढ़ा तो उसमें सम्वत् १३८८ अंकित था, इसमें से ५७ घटा दिया जाये तो सन् १३३१ में इस मन्दिर का निर्माण किया गया था, इतना प्राचीन मन्दिर तो ब्रज में कहीं नहीं है | यह बीजक उस समय का है जब भारत में तुगलक वंश का राज्य था | जिन्होंने इतिहास पढ़ा है, वे जानते हैं कि भारत में मुस्लिम शासन के अंतर्गत सबसे पहले गुलाम वंश का शासन हुआ, उसके बाद खिलजी वंश फिर तुगलक वंश, उसके पश्चात् क्रमशः सैयदवंश, लोदीवंश और सबसे अंत में मुगलवंश का शासन हुआ | यह इतिहास की परंपरा है | ब्रज में मुग़लकालीन भी बहुत से मन्दिर हैं किन्तु सतवास ग्राम में हमें ब्रज के सबसे प्राचीन मन्दिर का बीजक प्राप्त हुआ और बड़े आश्चर्य की बात यह है कि इस ओर अभी तक किसी शोधकर्त्ता अथवा इतिहासकार की दृष्टि नहीं पड़ी | यह मन्दिर तो अत्यधिक शोध का विषय है और पता नहीं क्यों अभी तक कोई पुरातत्त्ववेत्ता और इतिहासकार सतवास नहीं पहुँचे, यह बड़े आश्चर्य की बात है | वहाँ के इस अति प्राचीन मन्दिर की खोज होने पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि हमारी यह प्रथम सीमायात्रा अत्यधिक सफल होगी |

जुरहरा

सतवास के बाद हम लोग जुरहरा पहुँचे | वहाँ के लोगों ने बताया कि ६१ वर्षों के बाद कोई बड़ी ब्रजयात्रा जुरहरा आई है | हमारी ब्रजयात्रा को देखकर वहाँ के लोगों में बहुत अधिक उत्साह देखने को मिला | थोड़ी-सी भूल यह हुई कि वहाँ के मुस्लिम भाई भी हमारी यात्रा का स्वागत करना चाहते थे किन्तु उन्हें वहाँ के कुछ स्थानीय लोगों ने रोक दिया | हमने उन लोगों से कहा कि रोकना नहीं चाहिए क्योंकि ये मुसलमान भी ब्रजवासी हैं | मैं अपना दृष्टिकोण बता रहा हूँ कि कालक्रम के अनुसार भारत में मुस्लिम-शासन के भय और कुछ लोभ के कारण सीमांत ब्रज के बहुत से ब्रजवासी हिन्दू, मेव (मुस्लिम) बन गये और आज भी विदेशी मुस्लिम देशों से भारतीय मुसलमानों के लिए पैसा आता है ताकि हिन्दू और मुसलमानों के बीच दरार बनी रहे, वे लोग इसी आशंका में रहते हैं कि कहीं भारतीय मुस्लिम फिर से हिन्दू न बन जाएँ | धनी अरब देश वालों को यह बड़ा भय रहता है | इसी प्रकार ईसाई देश अपने मिशनरियों के माध्यम से भारत में गरीब और निम्न जातियों के लिए बहुत धन भेजते रहते हैं, उन्हें भय रहता है कि कहीं ईसाई बने हुए भारतीय फिर से हिन्दू न बन जाएँ | इस प्रकार ये विदेशी लोग हिन्दुओं और मुस्लिमों तथा ईसाईयों के मध्य निरंतर दरार उत्पन्न करने में लगे रहते हैं, जिसमें उनके अपने निजी स्वार्थ हैं किन्तु वे लोग अपना काम जानें, मेरी तो सच्ची भावना यही है कि सम्पूर्ण ब्रजमंडल के समस्त निवासी पहले भी ब्रजवासी थे और अब भी हैं, केवल बाहरी

दरारें ऐसी आ जाती हैं जिससे इनकी बुद्धि भ्रमित हो जाती है परन्तु मैं तो सभी को ब्रजवासी ही मानता हूँ और मेरे मन में मेवात क्षेत्र के हिन्दुओं और मुस्लिमों के प्रति कोई भेद नहीं है | इसीलिए जब जुरहरा में वहाँ के हिन्दुओं ने मुसलमानों को हमारी यात्रा का स्वागत करने से रोक दिया तो मैंने उन लोगों से कहा कि तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया, वे लोग स्वागत करना चाहते थे तो तुम्हें उन्हें रोकना नहीं चाहिए था क्योंकि हो सकता है कि सीमांत क्षेत्र के मेवात के इन मुस्लिमों के मन में भी हिन्दूधर्म के प्रति कुछ प्रेम उत्पन्न हो जाए, इसमें कोई कठिन बात नहीं है, आखिर ये भी तो मनुष्य ही हैं क्योंकि इनका जन्म भी ब्रज-वसुंधरा में हुआ है, यहाँ की पवित्र मिट्टी में ये पले हैं, इसी मिट्टी के ये पुतले हैं | जैसे भारत में राजनीतिक लोग अपने वोट बैंक के लिए हिन्दुओं को ब्राह्मण, गूजर, जाट, यादव और दलितों में अलग-अलग बाँट देते हैं, उसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति है | शक्तिशाली देश अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दुनिया में फूट-कलह पैदा करते रहते हैं जिससे कि हमारे अस्त्र-शस्त्र खूब बिकें, हमारा यश हो और ये गरीब देश आपस में लड़ते रहें और पहले से भी अधिक गरीब बनते रहें, आगे न बढ़ पायें | इस बात को साधारण जनता नहीं मानती है और इस कुचक्र को समझती भी नहीं है कि दुनिया में ऐसा खेल क्यों हो रहा है ? धनी और शक्तिशाली देश निर्धन, कमजोर देशों को आपस में लड़ाते रहते हैं और उन्हें लड़ाकर स्वयं तमाशा देखते रहते हैं | साधारण जनता के पास इस षड्यंत्र को समझने की बुद्धि नहीं होती है और हो भी कैसे सकती है क्योंकि हर आदमी अपना पेट पालने में ही व्यस्त है |

पुन्हाना

जुरहरा के बाद हमारी यात्रा पुन्हाना पहुँची तो वहाँ बहुत से मुसलमानों ने भी स्वागत में फूल बरसाये और यात्रा के प्रारम्भ में जो लोग आशंका कर रहे थे कि सीमांत ब्रज में लड़ाई-झगड़ा होगा, वह आशंका गलत निकली |

आलीब्राह्मण (बामनारी)

इसके बाद जब आलीब्राह्मण (बामनारी) में यात्रा पहुँची तो छोटी-सी समस्या दुर्वासामन्दिर के पास आ गई | वहाँ के स्थानीय मुसलमानों ने मुझसे कहा कि दुर्वासाकुण्ड से होकर मत जाइये | मुझे इस समस्या के बारे में कुछ पता नहीं था | इतना जरूर देखा कि कुछ पुलिस वाले आये और कहने लगे कि कहो संतजी किधर से चलें तो कुछ लोग बोले कि इधर से चलिए और कुछ लोग बोले कि नहीं, उधर से चलिए | यह देखकर मैंने वहाँ के लोगों से पूछा कि यहाँ की समस्या क्या है, ये जो मुसलमान भाई खड़े हैं, ये क्या चाहते हैं ? वहाँ के ब्रजवासियों ने बताया कि यहाँ की समस्या यह है कि मुसलमान लोग चाहते हैं कि दुर्वासाकुण्ड के रास्ते से होकर मत जाएँ और हम हिन्दू चाहते हैं कि दुर्वासाकुण्ड से होकर ही चलिए | मैंने कहा कि ये तो कोई समस्या ही नहीं है, हम लोग कुण्ड पर कब्ज़ा करने तो आये नहीं हैं | इतनी छोटी-सी बात पर आपसी फूट की इतनी बड़ी दीवार कैसे खड़ी हो गई? मैं तो समझता हूँ कि हमलोग सभी के अतिथि हैं चाहे वे यहाँ के मुस्लिम हैं अथवा हिन्दू हैं | मेरी दृष्टि में तो यहाँ के हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य कोई भेद ही नहीं है | यहाँ के मुस्लिमों को विचार करना चाहिए कि हम लोग कीर्तन करते हुए आ रहे हैं, हमारे हाथों में कोई हथियार नहीं है, लाठी-डंडे नहीं हैं | ऐसी स्थिति में उन्हें भय तो होना ही नहीं चाहिए | यहाँ के मुस्लिम एक बार मानमन्दिर आकर देखें, वहाँ रोगियों को नित्य ही निःशुल्क औषधि का वितरण किया जाता है | औषधि लेने के लिए हमारे यहाँ मुसलमान लोग भी आते हैं | हम लोग उनसे किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं करते हैं | मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ के मुस्लिम भाइयों को हमें बुलाकर अपने दरवाजे के सामने से यात्रा निकालना चाहिए, इससे समाज में परस्पर प्रेम बढ़ता है और

मानवता भी बढ़ती है किन्तु मैं समझ गया कि यहाँ के मुसलमानों में आपसी मनमुटाव अधिक है। इसलिए मैंने उनसे कह दिया कि हम लोग दूसरे रास्ते से होकर जायेंगे, आपके रास्ते से होकर नहीं जायेंगे, जिसमें आप लोगों की प्रसन्नता होगी, हम वही काम करेंगे क्योंकि टकराव का रास्ता गलत है, यह मनुष्य को इन्सान से हैवान बना देता है, यही एक कठिनाई है जो हमारे देश में चल रही है और मिट इसलिए नहीं सकती क्योंकि इसके पीछे जो विदेशी ताकते हैं, वे कभी भी हिन्दू-मुस्लिम के मध्य एकता नहीं होने देंगी। हम लोग तो विदेशी ताकतों के शतरंज की गोट हैं। इसीलिए भारत और पाकिस्तान के बीच वर्षों से शत्रुता चली आ रही है, कितने ही युद्ध भी हो गये। इसी प्रकार मुस्लिम देशों में भी ईरान और इराक तथा सऊदी अरब और ईरान के बीच शत्रुता चलती रहती है। यह सारा क्षेत्र ही विदेशी ताकतों का खिलौना है, जब चाहे ये लोग एक देश को दूसरे देश के विरुद्ध युद्ध में फँसा देते हैं, इससे उनके हथियार भी बिकते हैं किन्तु गरीब देशों के कठिनाई से जीवन यापन करने वाले लोग इन विदेशी ताकतों के कुचक्र को नहीं समझ पाते हैं कि हम लोग तो एक खिलौना हैं और हमको खिलौने की तरह नचाया जा रहा है, जब चाहे हमको खिलौने की भाँति एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ा दिया जाता है। अस्तु, आलीब्राह्मण के मुस्लिमों के मना करने पर हम लोग दूसरे रास्ते से यात्रा लेकर चले गये और किसी प्रकार का कोई झगड़ा नहीं हुआ, मामला शांत हो गया क्योंकि हमारा लक्ष्य तो यह है कि सीमांत ब्रज का जो हिस्सा ब्रज से कट गया है, उसे पुनः ब्रज से जुड़ना चाहिए और लड़ाई-झगड़े से वह नहीं जुड़ता है। हमारी सीमा यात्रा का प्रथम उद्देश्य तो यह है कि ब्रज कितना बड़ा है, इसके बारे में लोगों को जानकारी देनी चाहिए क्योंकि किसी को इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि ब्रज कितना विस्तृत है। यहाँ तक कि आजकल के साधु-संतों और आचार्यों को भी ब्रज के बारे में वास्तविक ज्ञान नहीं है। ब्रह्माण्ड पुराण में लिखा है –

चतुर्दिक्षु प्रमाणेन पूर्वादि क्रमतोगणत्।
पूर्व भागे स्थितं कोणं वनं हास्याभिधानकं॥
भागे च दक्षिणे कोणं शुभं जन्हुवनं स्थितं।
भागे च पश्चिमे कोणे पर्वताख्य वनं स्थितं॥
भागे ह्युत्तर कोणस्यं सूर्यपतन संज्ञकं।
इत्येता ब्रज मर्यादा चतुष्कोणाभिधायिनी॥

ब्रज के पूर्वभाग में हास्यवन है, जो वर्तमान में अलीगढ़ जिले का हसनगढ़ ग्राम है, वहाँ तक ब्रज की सीमा है। दक्षिण दिशा में जन्हुवन है, जो धौलपुर तहसील का जाजऊ ग्राम है, वहाँ तक ब्रज की सीमा है। पश्चिम दिशा में पर्वत वन (पहाड़ी) है, वहाँ तक ब्रज की सीमा है। उत्तर में सूर्यपत्तन नामक वन है, जो अलीगढ़ जिले में ग्राम जेवर के नाम से जाना जाता है, वहाँ तक ब्रज है।

इत बरहद उत सोनहद उत सूरसेन को गाँव।
ब्रज चौरासी कोस में मथुरा मण्डल धाम॥

अंग्रेजों के शासन काल में मथुरा के तत्कालीन जिलाधिकारी ग्राउस ने भी अपनी ब्रज सम्बन्धी पुस्तक "मथुरा मेमॉयर्स" में भी ब्रज की इस सीमा को माना है। उसके बाद से पता नहीं क्यों ब्रज के बारे में संकीर्णता फैली, लोग ब्रज की सीमा को लेकर सिकुड़ते चले गये और मथुरा-वृन्दावन के बड़े-बड़े विद्वान् सीमांत ब्रज के बारे में न तो कुछ चिन्तन करते हैं और न ही कभी इधर आते हैं। इस तरह वर्तमान समय में ब्रज को लेकर बहुत बड़ा सिमटाव देखा जा रहा है और उसमें किसी सुधार की सम्भावना नहीं दिखाई देती है। मैं उन लोगों को कुछ समझा नहीं सकता क्योंकि वे अत्यधिक श्रीसंपन्न ख्याति प्राप्त लोग हैं। जो विद्वान् होते हैं, वे किसी के आगे झुक नहीं सकते। इससे अच्छा मैंने यही समझा कि मैं स्वयं सीमांत ब्रज में यात्रा लेकर पहुँचूं और वहाँ के स्थलों के माहात्म्य से वहाँ के लोगों को अवगत कराऊँ क्योंकि आज सम्पूर्ण ब्रज में ब्रजवासियों को अपने ग्राम की, अपने लीलास्थली की महिमा का कोई ज्ञान नहीं है। इसी दृष्टिकोण को लेकर ही मैंने यह सीमायात्रा प्रारम्भ की है। जहाँ-जहाँ भी हमारी यात्रा

गयी, लोगों ने इसका बहुत स्वागत किया | पुन्हाना और खबर छापी गयी कि ६० वर्षों के बाद कोई ब्रजयात्रा हमारे क्षेत्र में आई है | वहाँ के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए और बार-बार मुझसे अनुरोध करने लगे कि महाराजजी अपनी यात्रा सदा ही यहाँ लाते रहिये | इस तरह हमारे मन में आशा की एक किरण जागी क्योंकि यहाँ आने से पूर्व ऐसी आशंका थी कि सीमांत ब्रज में हमें सफलता जुरहरा में तो समाचार पत्रों में बड़ी प्रमुखता के साथ यह नहीं मिलेगी किन्तु हमें बहुत बड़ी सफलता मिली | पुन्हाना और जुरहरा के बाजारों में यात्रा का ऐसा अभूतपूर्व स्वागत किया गया कि लोग कहने लगे कि ऐसा स्वागत तो यहाँ आज तक किसी राजनेता का भी नहीं किया गया |

किसने न भीख मांगी बरसाने लेके झोली |

ये नाचती औ गाती मंगतों की फिरती टोली ||

ब्रह्मा ने मांगी चौमुख, शिव ने भी मांगी पंचमुख,

श्री शेष ने सहस मुख भिक्षा की बोली बोली |

राजा ने ताज छोड़े पंडित ने ग्रन्थ छोड़े,

सब बन गये भिखारी सत्ता की जला होली |

क्या श्वेत केश वाला क्या नव वधूटी वाला,

दीवाने बन के फिरते विजया ही ऐसी घोली |

जिसने न भीख मांगी वो ही रहा अभागी,

ब्रज गौर श्याम जोरी दाता ने झोली खोली |

(प.पूज्य श्री रमेश बाबाजी कृत

'बरसाना' पुस्तक से संग्रहीत)